जय गुरुदेव

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी द्वारा जीवन में ही अमर
पद प्राप्त कराने हेतु मार्ग दर्शाने वाली पत्रिका।]

(अहमदाबाद साकेत महायज्ञ का एक दृश्य)

वर्ष २१ अंक ७–८

नवम्बर–दिसम्बर १९७८

[वार्षिक मूल्य १०
एक प्रति १)]

Scanned with CamScanner

❀ जयगुरुदेव ❀

अमर सन्देश

[सतगुरु की अखण्ड वाणी,
जीवन पथ की कहानी।
जीवन सुधारक वाणी,
जीवों की भव पार कहानी॥]

वर्ष २१ अंक ७-८

नवम्बर-दिसम्बर सन् १९७८
कार्तिक-अगहन सं० २०३५

—❀—

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक अमर सन्देश
२३ पाण्डेय बाजार
आजमगढ़ (उ० प्र०)

—❀—

प्रकाशक

चिरौल सन्त आश्रम
कृष्ण नगर
मथुरा
टेलीफोन नं० १३०६

—❀—

सम्पादक

विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल

—❀—

वार्षिक मूल्य
१०) रू०
एक प्रति का मूल्य १ रू०

अमर सन्देश के नियम

❀ अमर सन्देश हर माह की २६, २७ तारीख को प्रकाशित होता है जो पाठकों के पास माह की पहली तारीख या उसके पहले मिल जाता है।

❀ जिस माह की १० तारीख तक उस माह का अमर सन्देश न मिले तो अप्राप्ति की सूचना भेजें। सूचना ग्राहक संख्या तथा अपना पता सही और साफ जरूर लिखें। यह भी लिखें कि कौन सा अंक नहीं मिला। ऐसे लोगों को माह की २६ ता० तक अमर सन्देश भेजा जाता है।

❀ अमर सन्देश का नया वर्ष अब मई से आरम्भ होता है। जनवरी से नहीं। मगर आप किसी भी महीने से ग्राहक बन सकते हैं। इसलिए नये ग्राहक मनीआर्डर कूपन पर अवश्य साफ साफ लिखें कि वे किस मास से ग्राहक बनना चाहते हैं।

अमर सन्देश तथा अमर सन्देश की फाइलें पुस्तकों के साथ नहीं भेजी जा सकती क्योंकि अमर सन्देश रजिस्टर्ड पत्रिका है। उसका डाक का नियम अलग है अतः उसके लिए डाक खर्च प्रति फाइल दो रुपया अलग से भेजें। इस समय फाइल सब खतम हैं।

रुपये तथा पत्र भेजने का पता:-
व्यवस्थापक—
'अमर सन्देश'
२३, पाण्डे बाजार,
आजमगढ़ उ० प्र०

Scanned with CamScanner

स्वामी जी ने कहा

तीन बातें सदैव याद रक्खोः—

(१) किसी की निन्दा न करना न सुनना। निन्दा करने से उसके पाप के बोझे से तुम दब जाओगे।

(२) कम खाओ इससे आलस नहीं आयेगा शरीर तन्दुरुस्त तथा चुस्त और फुर्तीला रहेगा। साधन भजन ठीक बनेगा।

(२) गम खाओ अर्थात् बर्दास्त करो। कोई कुछ भी कहे उसे सहन कर लो।

वर्ष २१ अंक ७-८] नवम्बर-दिसम्बर १९७८ वार्षिक मूल्य १० रु० [एक प्रति १ रु०

शब्द की करो कमाई दम दम

शब्द की करो कमाई दम दम। शब्द सा और न कोई हमदम ॥१॥
शब्द को सुनो बंद कर सरवन। शब्द की गहो जाय धुन झमझम ॥२॥
शब्द तेरी दूर करे सब हमहम। शब्द को पाय गहो वहां समसम ॥३॥
देखियो जोत उजाला चमचम। रहो फिर धुन में छिन छिन रम रम ॥४॥
भोग सब त्यागे हुआ मन उपसम। सुनी अब चढ़ कर धुन जहां घमघम ॥५॥
कहें गुरु रह तू धुनमें जम जम। बहुर सुन पाई इक धुन बमबम ॥ ॥
सुरत फिर चढ़ी वहां से धमधम। सुन्न में पहुंची लइ धुन छम छम ॥७॥
और भी सुनी एक धुन खम खम। कहूं क्या महिमा शब्द अगम गम ॥८॥
करूँ मैं जितनी ही सब कम कम। खोल कस कहूँ बात यह मुबहम ॥९॥
सुरत को मिली अधर की गम गम। पिया सँग बैठी करत परम रम ॥१०॥
मिटा सब घट का अबही तम तम। बरसने लागीं झड़ियां रिमझिम ॥११॥
तेज अब फैला घट में इम इम। अमीरस चुआ चुए ज्यों शबनम ॥१२॥
हुआ मन सभी जतन से बरहम। सुरत के लागी अब धुन मरहम ॥१३॥
गुरू पर बन मन करूँ समरपन। कहें अस राधास्वामी बचन दमादम ॥१४॥

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

वर्ष २१ अंक ७-८
नवम्बर-दिसम्बर सन १९७८

ग्राम और नगर फेरियां

जयगुरुदेव बाबा के प्रेमियों का गान्धी जी के रामराज्य तथा सतयुग आगवन स्वागत तैयारियों का अभूत पूर्व कार्यक्रम। सरकार को जगह-जगह से ज्ञापन भी दिये गये।

परम पूज्य स्वामी जी के आदेश से देश के प्रत्येक गांव में १अक्टूबर रविवार को फेरियां निकली। जिन गांवों में सतसंगी नहीं थे उन गांवों में पास के अन्य गांव के प्रेमियों ने फेरी निकाला।

इन फेरियों का मुख्य उद्देश्य गान्धी जयन्ती के पूर्व आम जनता को बताना था कि गान्धी जी का राम राज्य का स्वप्न पूरा होने जा रहा है। अब जल्द ही सतयुग आयेगा। जयगुरुदेव बाबा ने २५ दिसम्बर ७७ से ढिढोरा पीट दिया है।

देश वालों नया एक सन्देशा सुनो
इस धरा पर ही सतयुग उतर आयेगा।

सतयुग के आने पर यह धरती माता एक बीघे में १०० मन अनाज देगी और सोना का भाव गिर कर ३०-३२ रुपया भरी हो जायेगा। देहात के गरीब से गरीब किसान को स्त्री भी हीरे जवाहरत के गहने पहनेगी। सभी सम्पन्न और सुखी होंगे।

किन्तु सतयुग आने के पहले उसकी स्वागत तैयारी में हम अपने खान-पान रहन-सहन उसके अनुकूल बना लें। भोजन शाकाहारी करें। मांस मछली, अण्डा इत्यादि अभक्ष्य भोजन त्याग दें और सभी नशीली वस्तुयें-शराब, ताड़ी गांजा-भांग,इत्यादि का सेवन बन्द कर दें। आपस में प्रेम से रहें। एक दूसरे के काम आयें। सेवा, त्याग और प्रेम का वातावरण फैलायें।

यदि आप ने समय रहते अपने को न परिवर्तित किया तो प्रकृति स्वयं अपने ढंग से डण्डे मार कर आपको ठीक कर लेगी तो मेरे प्यारे, तुम्हारी क्या खूबी रह जायेगी।

देश के लगभग हर गांव में जयगुरुदेव बाबा के प्रेमियों ने यह सन्देशा पहुँचाया। शायद ही कोई झोपड़ी या घर बचा हो जिन्हें यह सन्देशा न मिला हो।

काशी में साकेत महायज्ञ तृतीय

साथ ही प्रेमियों ने यह भी बताया कि आगे १५ फरवरी से २५ फरवरी सन् १९७९ को काशी में गंगा की रेती पर दशाश्वमेध घाट के उस पार एक विशाल यज्ञ होने जा रहा है जिसमें बाबा विश्वनाथ बम भोले बाबा ११ दिन तक स्वयं उपस्थित रहेंगे और भक्ति और मुक्ति मुफ्त बांटेंगे। इस यज्ञ में लगभग २ करोड़ से अधिक लोगों के उपस्थित होने की आशा है। संसारी कामनायें तो बिना मांगे पूरी होंगी। साथ ही भूत-बाधा, प्रेत बाधा इत्यादि भी रुपये में १२ आना ठीक हो जायेगी।

अतः उस यज्ञ में स्वयं अवश्य पहुंचें तथा अपने इष्ट मित्रों को भी ले आवें।

२ अक्टूबर की फेरी

फिर २ अक्टूबर को जिला स्तर पर लगभग सभी नगरों में यह फेरियां निकलीं। सभी स्थानों से यह सूचनायें प्राप्त हो रही हैं कि नगर फेरी का दृश्य बड़ा ही मन मोहक तथा अभूत पूर्व था। सभी प्रेमी भारतीय वेष-भूषा में थे।

Scanned with CamScanner

सबका सिर ढका था तथा सभी पूर्ण अनुशासित ढंग से नारे लगाते, प्रार्थना गाते और सन्देशा देते जा रहे थे। प्रेमियों के प्रमुख नारों में से कुछ निम्न थे—

मांस मछली — नहीं खायेंगे
शराब ताड़ी — नहीं पीयेंगे
हड़ताल तोड़ फोड़ आन्दोलन—नहीं करेंगे
क्या खा पीकर हुये खराब-मांस मछली अण्डाशराब
क्या खाने से होगी भलाई-साग सब्जी दूध मलाई।
जयगुरुदेव नाम किसका? परमात्मा का।
समय बदलने वाला है-सतयुग आने वाला है।

फेरी के बाद एक जन सभा हुई। उसमें प्रेमियों ने जयगुरुदेव बाबा के विचारों तथा सन्देश को सुनाया। अन्त में सरकार को १३ सूत्री एक ज्ञापन दिया गया। ज्ञापन निम्न है—

—: ज्ञापन :—

१-महत्वपूर्ण स्थान लोक सभा में जनता की भलाई के काम हों। लोक-सभा को अपने-अपने प्रचार का माध्यम न बनाया जाय। भारतीय लोक-सभा की गरिमा विश्व में हो।

२-जाति-विवाद हरिजन नाम की उपाधि खत्म की जावे। हरिजन, जाति-संज्ञा से अलग कर घृणित उपाधि दे दो, इससे तनाव बढ़ते हैं। इसको खत्म किया जावे।

३-इमरजेन्सी काल में २६ जून ७५ से २२ मार्च ७७ तक जो भी अत्याचार जबरन; निरपराध गरीबों पर हुए हैं, चल-अचल सम्पत्ति हड़पने व मारने-पीटने व जेल में बन्द करने के, राजनैतिक, व गैर राजनैतिक, साधुओं पर-उन अत्याचारियों को शीघ्र न्याय द्वारा दण्डित किया जावे अब देर न करें।

४-सारे देश में तुरन्त नशाबन्दी लागू कर दी जावे। पचास फीसदी क्राइम बन्द होंगे। दस रुपये एक मजदूर कमायेगा, पचास रुपये शराब में खर्च करेगा-आयेगा कहां से?

५-सारे देश में गोवध बन्द कर दिया जावे।

६-विद्यालयों में पूर्ण विद्यार्थियों को राजनीति से अलग रखा जावे। यूनियन को विद्यालय से खत्म कर दिया जावे।

७-भारतीय वेश-भूषा बच्चों को पहिनना बताया जावे, आठ क्लास के ऊपर।

८-सारे देश में हिन्दी राष्ट्रभाषा का प्रयोग किया जावे।

९-अमानवीय गुण्डागर्दी व हकैतियों को बन्द किया जावे। कुछ कानून, कुछ धर्म की शिक्षा द्वारा, जनता शासन व्यवस्था से निर्भय रहे।

१०- जनता को प्राप्त न्याय, अल्प धनराशि से सस्ता व तुरन्त मिले।

११-अधिकारियों को जनता सेवा व देश-भक्ति की शिक्षा दी जावे। भर्ती होने के पूर्व कम से कम एक साल का कोर्स रखा जावे।

१२-लोक सभा में एक प्रतिनिधि धर्म का हो। एक मुसलमान, एक ईसाई, एक हिन्दू।

१३-न्याय को देने के लिये स्पेशल मजिस्ट्रेट रखे जावें जो तुरन्त घटना-स्थल पर पहुंच कर न्याय दे सकें।

ज्ञापन सर्व सम्मति से पारित हुये आम जनता के लोगों ने भी ज्ञापन की बातों का पूर्ण समर्थन किया। तब इन ज्ञापनों की प्रति मुख्य मन्त्री तथा प्रधान मन्त्री के पास पहुँचाने हेतु १ अक्टूबर को क्षेत्रीय अधिकारी अथवा थाना-ध्यापकों और २ अक्टूबर को जिलाधीश को हर नगर में दिये गये। संयोग से २ अक्टूबर को आजमगढ़ में मुख्य मन्त्री महोदय उपस्थित थे। अतः आजमगढ़ में मुख्य मन्त्री महोदय को

Scanned with CamScanner

हाथ से ज्ञापन की एक प्रति दी गई। और प्रधान मन्त्री महोदय के पास भेजने हेतु जिलाधीश को भी ज्ञापन की प्रति दी गई।

इन फेरियों की सभी देश वासियों ने भूरि भूरि प्रशंसा की और श्रीगुरुदेव बाबा के दर्शन के लिए जिज्ञासा प्रकट किया।

स्वामी जी का कार्यक्रम

परम पूज्य स्वामी जी महाराज जन्माष्ठमी के सतसंग में भी कुछ अस्वस्थता अनुभव कर रहे थे। फिर भी सतसंग के काम करते हुये ही लखनऊ, कानपुर इत्यादि से होते हुये मथुरा दिनांक २९-३० अगस्त तक पधार गये थे।

थोड़ा विश्राम तथा आश्रम के मुख्य कार्यों को करने के उपरान्त परम पूज्य स्वामी जी महाराज १७ सितम्बर को अहमदाबाद पहुँचे। वहाँ २१ तक विभिन्न स्थानों पर सतसंग करने के बाद तब परम पूज्य स्वामी जी महराज बम्बई गये। २२ से २६ सितम्बर तक महाराष्ट्र में सतसंग करने के बाद स्वामी जी महाराज इन्दौर आये। २७ सितम्बर से २ अक्टूबर तक स्वामी जी मध्य प्रदेश के कार्यक्रमों में रहे।

१ अक्टूबर को देहातों की फेरी निकली उसमें स्वामी जी महाराज मध्य प्रदेश के सनावद गांव से फेरी के साथ थे और भी गांव तक उसकी समाप्ति हुई। २ अक्टूबर को परम पूज्य स्वामी जी महराज इन्दौर में फेरी में रहे। वहाँ गान्धी हाल में फेरी के बाद भी तथा रात्रि में बड़ा ही हृदय ग्राही सतसंग हुआ।

उसके बाद स्वामी जी महाराज राजस्थान में पधार गये। ५ अक्टूबर तक राजस्थान के विभिन्न स्थानों में सतसंग करने के बाद स्वामी जी मथुरा आश्रम पर पधारे।

सूचना मिली है कि १५-१६ अक्टूबर को स्वामी जी महराज दिल्ली होते हुये पूर्वी उत्तर प्रदेश के लिए चल दिये हैं। २० अक्टूबर को लखनऊ रहे। दांत में कुछ तकलीफ होने के कारण स्वामी जी महराज १-२ दिन वहीं रहेंगे

आगे शीघ्र ही स्वामी जी महाराज काशी में आकर वहां की व्यवस्था में कुछ समय देंगे तब पूर्वी जिलों में विभिन्न स्थानों पर सतसंग होगा। निश्चित तारीख अभी ज्ञात नहीं हो सकी है।

पावन पर्व वार्षिक भण्डारा

इस वर्ष पावन पर्व वार्षिक भण्डारा अगहन शुक्ल १० दिनांक ९ दिसम्बर १९७८ को है। इस वर्ष ज्ञात हुआ है कि नये आश्रम की जमीन जो सरकार आपात काल में ले ली थी अब लौटाया है। अतः इस वर्ष उसी जमीन पर वार्षिक भण्डारा मनाया जायेगा।

प्रेमी जन ८ दिसम्बर १९७८ को ही आश्रम पर पहुंच जायेंगे। पूजन का कार्य ८-९ की रात्रि में होगा।

सतसंगी को निर्देश

(सतसंग जन्माष्ठमी २६-८-७८ इलाहाबाद प्रातः ७-३० बजे)

लाभ नहीं मिलता है तो लाभ को रखा जाता है। और वक्त जरूरत पर फिर उस लाभ का जो आनन्द आपको मिलता है वह अपने आप स्वयं मालूम होता है।

सदैव सचेत रहना चाहिये

तो यह चेतना और सचेतता हम सभी सतसंगियों में हमेशा जब कभी ऐसे भी उत्सव मनाए जांय इनमें होनी चाहिए। और इसी बात पर हम बराबर जोर देते हैं। लोगों को हम थोरे इशारों में कहते रहते हैं कि जो काम बताया जाय उसको तत्क्षण उसी समय किया जाय।

हर बात को अपने ऊपर लेना चाहिये

ऐसा अपने को नहीं समझना है कि नहीं है। हम बिलकुल एकदम से खड़े रहें और जो खड़े रहेंगे उसको वहीं काम करना चाहिए जितनी देर खड़े रहें। तब लोगों को लाभ मिलता है।

एक एक बात को पकड़ना चाहिये

सतसंग में आकर के एक-एक बचन एक-एक शब्द को सुनना और उसे छोड़ न देना यह पूरा लाभ सतसंग का होता है। हमेशा होशियार रहें कि सतसंग होने जा रहा पता नहीं क्या चीज निकल जाय।

भगवान के अस्तित्व को भक्तों ने रक्खा

भक्तों और प्रेमियों ने हमेशा ईश्वर के अस्तित्व को, भगवान के अस्तित्व को यहां रखा। हमेशा बराबर। और जब भक्त हमेशा ईश्वर के अस्तित्व को यहां रखते हैं तो वह भगवान भक्तों पर हमेशा दया करते रहते हैं। क्योंकि भक्तों के ही द्वारा भगवान का प्रतिपादन होता है। भगवान बताया जाता है, हैं। भगवान की सृष्टि का विस्तार वर्णन किया जाता है। और भक्त नहीं रहेंगे तो भगवान को कौन मानता है। इसलिए भक्तों पर भगवान दया करते हैं।

हम लोगों को उनका काम करना

और हम लोगों को उसका काम करना और वह आपका काम करेगा। भक्तों के साथ भगवान और भक्त के साथ, भगवान के साथ भक्त इन दोनों का बिलकुल मिलाप और जोड़ा है। बिना उनके उनको चैन नहीं, बिना इनके उसको चैन नहीं। और बाकी तो रामायण में कह दिया है—

"एक पिता के विपुल कुमारा"।

एक पिता के कई एक पुत्र होते हैं। कोई पिता की दुश्मनी नहीं होती। लेकिन—

जो पितु मान बचन मन कर्मा।
सो प्रिय पुत्र प्राण समाना॥

आज्ञा पालक अति प्यारे होते है

मनसा वाचा कर्मणा से, कर्मों से, आंख से, कान से बात से, मन से, बुद्धि से, हर अंग

से जो उस आदेश का पालन करते हैं वह उसके कैसे होते हैं ? अति प्यारे। किन्तु वह सबके साथ होता है। इसलिए भक्त के साथ भगवान और, भगवान के साथ भक्त।

भक्त ही भगवान का प्रचार करता है

तो अस्तित्व भगवान का हमेशा भक्तों द्वारा ही स्थापित होता रहा। भक्तों द्वारा उसका प्रचार होता रहा और भक्तों द्वारा उसकी महिमा होती रही। और जो वह दया करते रहे वह इतना बल, इतना विश्वास, इतना ज्ञान भगवान देता है कि भक्त को कोई विचलित नहीं कर सकता।

हमेशा सतर्क रहें

इसलिए हमेशा आप लोग सतसंग में आकर के चौबीसों घण्टे सतर्क रहें। बाबा जी आ जायंगे न मालूम क्या बात किस समय पर सुना दें। यह नहीं कि हम उधर बैठे हुए हैं। अभी सतसंग का समय नहीं हुआ। न मालूम कौन सी बात सतसंग के पहले निकल जाय। तो हम लोगों को हमेशा सावधान और हमेशा सतर्क रहना चाहिए। हर जगह पर। और सतसंग तो आप जगह-जगह पर प्राप्त हो।

दर्शन क्यों लिया जाता है

दर्शन इसलिए दिए जाते हैं कि हमको कभी भूल मत जाइएगा। दर्शन इसलिए किए जाते हैं कि हम कभी न भूल जांय। देना और लेना इन दोनों का बराबर एक समान महत्व है। दर्शन देने का दर्शन करने का। वह कहते हैं मुझे छोड़ मत देना। वह कहते हैं कि मैं आपको भूल न जाऊं। दोनों चीजें बराबर रहती हैं। वह आपको याद करते हैं उनको आप याद करते हैं।

दर्शन और सतसंग की महिमा अकथनीय है

इस तरह महापुरुषों ने जो सतसंग की क्रिया रखी है वह बहुत उच्च कोटि की है। इसका स्थान अकथनीय है और सतसंग की महिमा कही भी नहीं जा सकती। महापुरुषों ने अपने ही वचनों में सतसंग की महिमा को अतुलित कर दिया। कोई इसका वर्णन नहीं कर सकता है। इसलिए महापुरुषों की महिमा भी वर्णित नहीं हो सकती है। जितनी होती है वह।

साधू भी सतसंग में आते हैं

सतसंग में हमेशा इस बात का ध्यान होना चाहिए आप गृहस्थ हो। कभी कभी ऐसा होता है कि जब जोर-शोर चलता है सतसंग का और चारों तरफ से जब जीव सतसंग में समेटे जाते हैं तो साधू भी चले आते हैं जो गृहस्थ से सम्बन्ध नहीं रखते। वह भी जीवात्माएं हैं। उनमें भी प्रेम पैदा हो जाता है। उनको भी यह चाहिए कि जब वह ऐसे सतसंग में उपस्थित हो जायं। मालिक का जब उनको भेद मिल जाय। रास्ता चलने का सुमिरन ध्यान भजन करने का। तो उनको केवल उसी में लग जाना चाहिए। और यह समझना चाहिए कि इतना जीवन हमारा सब व्यर्थ में चला गया। व्यर्थ जीवन की पूंजी को यहां भजन करके, ध्यान और सतसंग करके पूरा कराएं। उनको किसी उद्देश्य में फिर नहीं लगना चाहिए।

उनको तब भगवान जल्द ही मिल जायेंगे

जब वह ध्यान भजन में लग जाएंगे और अपने खोए हुए समय की उतनी पूर्ति करने की भावना बना लेंगे तो जल्दी से जल्दी उनका काम हो जायगा। उनको किसी उद्देश्य में नहीं लगना चाहिए। उतनी ही बात करनी चाहिए कि मेरा समय बचा हुआ कहीं खराब न हो जाय और पिछले समय को मैं पूरा कर लूं। उन लोगों को ये।

Scanned with CamScanner

नामदान को बताना नहीं चाहिये

लेकिन जो लोग ऐसा करते हैं कि कहीं जाकर के भूल से कहीं किसी को कुछ बता देते हैं उनके ऊपर आ जाता है कर्मों का अपार बोझा। और फिर वह क्षमा नहीं करा सकते क्योंकि उन्होंने अनुचित विशेष रूप से गलती की। ऐसी गलती को जो क्षमा नहीं की जा सकती। तो मालिक भी क्षमा नहीं करता है। महात्माओं की बात तो छोड़ दीजिए क्यों कि मालिक के रास्ते में यह चीजें बहुत वर्जित हैं।

दूसरे का बोझा अभी नहीं उठा सकते

अपना काम पूरा करो। जब अपना काम पूरा हो जायगा तब कहीं जाकर के दूसरे काम के करने की यह क्षमता होगी कि हम दूसरे का भार, दूसरे का बोझा, गन्दगी का उठा सकते हैं कि नहीं उठा सकते।

ऐसा कोई मत करो

तो ऐसा काम कोई भी आदमी मत करो अपने निरूपण में, अपने कल्याण में, अपने बोझे उतारने में, यहां से निकलने में, वही चेष्टा करे। और इसीलिए यह जीव चारो तरफ से खींचे जा रहे हैं कि सब लोग अपने-अपने प्रयास में लग जायं। खोये हुए समय को पूरा कर लें। तो कोई आदमी ऐसा नहीं। जितना बात आप को बताई जाय।

हर आदमी शाकाहारी बने

हर आदमी हमेशा होशियार रहे कि अपने को शाकाहारी बने। बिना शाकाहारी बने हुए परमार्थ के रास्ते पर और परमार्थी बातों का अनुकरण नहीं कर सकता। शाकाहारी होना यह प्रथम वसूल पहला उसका यह कदम है। जब वह शाकाहारी नहीं होगा तब तक इस तरफ आगे नहीं बढ़ सकेगा। किसी भी तरह से की। शाकाहारी में दया के चिन्ह, अंकुर, प्राप्त हो जाया करते हैं। प्रेम आने लगता है। विवेक होने लगता है। सद्भाव और श्रद्धा और ईश्वर की तरफ उसका रुझान होने लगता है। और जब तक वह शाकाहारी पूर्ण रूप से अपने को नहीं बनेगा तो यह अंकुर उसके अन्दर में नहीं आयेगा। फिर तो उसके वही चीजें रहती हैं जो भौतिक थी। और कभी न कभी उसको।

शाकाहारी स्वयं रहो और दूसरे को भी बनाओ

अपना भी शाकाहारी रहो दूसरों को बनाने की चेष्टा करो। जमीन तैयार करना यह हम सब लोगों को आदान-प्रदान सेवा बाहर की। जमीन को बनादिया। बीज पड़ता चलेगा समय आने पर बीज काम अपना कर जावेगा।

जमीन तैयार होने पर बीज डाल दिया जाता है

महापुरुषों का भगवान के नाम का डाला हुआ बीज कभी व्यर्थ नहीं जाता। वह कभी न कभी समय और अवसर पाकर के फलता-फूलता जम जायेगा। यह हमेशा इस बात को ध्यान में रखो। महात्माओं की मेहनत, कभी निष्फल नहीं जाती है। और न कभी निष्फल हुई।

हर चीज का एक निश्चित समय होता है

हमारी समझ में देर सबेर हो सकती है लेकिन उसके लिए निश्चित समय है। जिसके लिए निश्चित समय होता है वह अपने समय से ही काम हो जाता है। और हममें इतना विवेक और विचार नहीं है। इसलिए देर होती है। तो देर क्यों हो रही है यह तो मालिक उसके ऊपर छोड़ दीजिए आप कि जो वह करेगा वह हमारे हित के लिए करेगा। समय से करेगा। उसमें सबका लाभ होगा। सबका फायदा होगा। सबका कल्याण होगा।

Scanned with CamScanner

जागरण साधारण नहीं है

हम लोगों को मानवता का कर्म करना चाहिए। मानव सेवा करनी चाहिए। जो देश के अन्दर इतना बड़ा विचार लोगों को मिल रहा यह वर्तमान समय में ऐसी भावनाओं का शुद्ध पवित्र जागरण लोगों को देखने को नहीं मिलता है। इसीलिए लोगों ने अपने-अपने धर्म की क्रियाओं को त्याग दिया। और उनको यह भी पता नहीं है कि अपने धर्म का अनुसरण किस तरह से हम लोगों को करना चाहिए। करना था और पहले के लोग कैसा करते थे जिन्होंने हमको बताया। अब आपको वह बात थोड़े समय में समझ में आ जायगी।

अगर पहले समझ लिए होते तो इतना परिश्रम न करना पड़ता

हमने पहले आपको यह बातें समझाई थीं कुछ साल पहले आप सभी लोग अगर इन सब चीजों पर ध्यान देकर परिपक्व अमल होकर के करते विश्वास और निष्ठा के साथ तो यह जो मेहनत आज कर रहे हैं पहले ही खतम हो जाती। इसीलिए महात्मा कहते हैं कि समय के अन्दर काम करो। समय को निकलने मत दो। समय के अन्दर काम हो जाय। अभी तो समय है। मेहनत का समय निकल जायगा तो फिर आप कोई महत्व नहीं रहा। मेहनत का समय अभी है। इसकी आवाज पहले ही से लग रही।

उनकी मर्यादा करनी है

इसलिए सब लोग उसमें डटे रहो। और भक्त भगवान भक्तों की, सन्तों, महापुरुषों की जो पहले होकर चले गए और आगे आएंगे और वर्तमान में उनकी मर्यादा को स्थापना हम लोगों को करनी है। हम लोग नहीं करेंगे तो दूसरा कौन करेगा ? जाना हुआ आदमी अगर उसकी स्थापना को न करे, मर्यादा को न स्थापित करे तो उसको कलंक लग जाएगा। जो नहीं जानते हैं उनके लिए कोई कलंक नहीं वह तो जानते ही नहीं। तो इसलिए भक्तों की बात और भगवान की और महापुरुषों की होनी ही चाहिए।

हर तीरथ में ले गये

जो सन्देश लोगों को यह वर्तमान में इस समय पर मिल रहा। मैं आपको कोई तीरथ कोई देवस्थान बाकी नहीं रखना चाहता हूं जिससे कि लोग यह समझें कि शायद बाबा जी देव स्थान नहीं। सभी देवस्थान अपने ही हैं और जो भूमि है वह भी अपनी है। भारत धर्म भूमि धर्म क्षेत्र भूमि है। चित्रकूट भी आप गए जहां कभी जाने की इच्छा भी नहीं आपकी होती थी और साथ आप हरिद्वार हो आए। आप अयोध्या गए। आप मथुरा गए। आप द्वारका किसी न किसी तरह से आपको खींचकर के निकट तक पहुंचा दिया। और बहुत से स्थानों पर आप उपस्थित हुए। काशी भी आप आ रहे हो।

पर्व लगाकर पवित्र किया

तो बाबा जी कोई ऐसी बात नहीं है। महापुरुषों की यादगार भी हो जाय। उन लोगों ने क्या क्या प्रार्थना करके किस-किस तरह से यह पर्व लगाकर के हम सबको पवित्र किया वह भी बात आपको मालूम हो जाय हम कैसे पर्व लगाकर के अपने को दूसरों को पवित्र करेंगे यह भी जानकारी हो जाय और भक्तों ने क्या मुसीबतें उठाई हम क्या मुसीबत उठा रहे हैं उसका भी अनुभव आपको हो जाय।

तो यह सब जानकारी जब रहती है तभी महिमा समझने में सुनने और करने में आनन्द

आता है और तभी निर्मलता और पवित्रता होती है और निष्ठा, विश्वास होता है।

भक्तों की महिमा रहती है

और भक्तों का नाम जभी अजर अमर हो जाता है जब तक कागज जल जाय। कोई कागज न रहे। रामायण न रहे। गीता न रहे। भागवत न रहे। वेद न रहे, पुराण न रहे। कोई पुस्तक न रहे कोई कागज न रहे लेकिन भक्तों का नाम नहीं जा सकता। जब तक यह भूमि रहती है।

तुलसीदास का, कबीर का, राम का कृष्ण का, जितने भी आए इन सबका नाम रहेगा। कागज कहीं भी आप गुम कर दीजिए लेकिन नाम भक्तों के रहेंगे।

ऐसा ईश्वर का भक्तों के प्रति खेल होता है, होता चला आया और भविष्य में भी होता रहेगा।

भूमि का असर होता है

तो इसलिए जिस भूमि का जो अस्तित्व है जिस भूमि का जो गुण है। अणु परमाणु जिसके अन्दर है वह हमेशा समय आने पर वह संचार करते हैं। उसमें से निकलते हैं। जैसे कोई चोट निकल रही है उसके अन्दर में और वह फायरिंग कर रही। ऐसे ही जब समय आता है तो जो अणु परमाणु धार्मिकता के हैं इसमें से निकलते है और वह बटम से भी बड़ा काम करते हैं। लोगों को मालूम नहीं है इस बात का।

तपस्या की जगी भूमि होती है

यह रहस्य कब मालूम होता है कि जहां-जहां महापुरुषों ने तपस्या की और वह आप तपस्या करें और उस भूमि पर जांय तो वह सब चीजें पता चलती हैं कि किस तरह से यह भारत भूमि की व्याख्या बड़े-बड़े सिद्ध पुरुषों ने त्रेता में, द्वापर में, सतयुग में की और बताया इसीलिए यह धर्म क्षेत्र स्थान है और इसकी महिमा जो है आपकी धर्म पुस्तकों में है उसको तो कोई काट नहीं सकता। हम भी नहीं काट सकते। लेकिन जो रहस्य, जो छिपा हुआ है कण-कण में समय आने पर आपको मालूम हो जायगा सामने आ जायगा।

जन्माष्टमी में ज्ञान का बोध होता है

तो यह तो अपना कार्यक्रम जन्माष्टमी का है। कल आपको बताया था थोड़ा सा। तो यह महापुरुषों की वह शिवरात्रि जन्माष्टमी है जहां ज्ञान का बोध होता है। बौद्ध जी को सभी लोगों ने माना जब गया में जाकर के उन्होंने ज्ञान दीपक को जलाया। जब ज्ञान दीपक जला तो लोग आने लगे तो इसीलिए यह अष्टमी महापुरुषों की है कभी बौद्ध की आयेगी, कभी तुलसी दास की आयेगी। कभी कबीरदास की आयेगी। कभी और किसी महापुरुष की आएगी तो कभी रैदास जी की आ जायेगी। तो कभी मुसलमानों में मुहम्मद की आ जायेगी। लेकिन यह है जब तक वह ज्ञान दीपक नहीं तब तक यह त्योहार फलीभूत हमारे लिए नहीं होते। और जब ज्ञान दीपक मिलता है तो यह सभी त्योहार हमारे लिए फलीभूत हो जाया करते हैं।

तो यह सतसंग है और ज्ञान दीपक सतसंग है। निवृति सतसंग है। जागरण का सतसंग है जिसमें जीवात्माएं जगें और मन भी जाग जाए। अपने घर में जाने का यह सतसंग है।

ग्यारह ग्यारह की टोलियां बनायें

इसके लिए आप लोग सब के सब ग्यारह ग्यारह आदमियों की टोलियां जल्दी से जल्दी काशी कार्यक्रम होने के पहले ही पूरी भारतवर्ष में स्थापित हो जाय। अपने जिले में विशेष

Scanned with CamScanner

सतसंगियों की एक गोष्ठी करें और गोष्ठी में यह कार्यक्रम सभी अपने निर्धारित कर दें। और जल्दी से जल्दी ग्यारह-ग्यारह आदमियों की टोली बना लें। आप यह प्रश्न बाद में समझना कि ग्यारह ही आदमियों की टोली क्यों बनाई। यह निश्चय किया है। यह बाद में बताया जायगा। सब बातें अभी बताने की नहीं होती कुछ समझाने की भी हुआ करती हैं। बाद में। गोपनीय रहस्य बाद में समझ में आता है।

सभी सूचना कानो कानो में पहुंचा दें

तो यह जिले-जिले में अपने प्रेमी भक्त मंडली एक गोष्ठी करके इस कार्यक्रम को जल्दी से लागू कर दें। और जल्दी से जल्दी यह कार्यक्रमों की सूचना इनके कानों तक पहुंचाएं जिसका अभियान प्रारम्भ हो गया है २५-१२-७७ से। उसको पूरा देश में कानों-कानों तक पहुंचा देना है। ऐसे कार्यक्रम की योजना जल्दी से ही निश्चत आप को सामने ले आ देना है।

आदेश का सही ढंग से पालन करना है

आप को यह पूछने और समझने की जरूरत नहीं। आपको तो यही करना है कि जो आदेश मिल गया उसका पालन अपने आप को सही ढंग से करना। अपने आप को सब सेवादार रहो। कोई आदमी इस सतसंग में नाम को प्राप्त करने की, मान को प्राप्त करने की चेष्टा न करें। जो मान को और नाम को प्राप्त करने की चेष्टा करेगा वह अपने आप पीछे हो जायेगा और सेवा करने वाले आगे आ जायेंगे। यह कभी मत समझें कोई भी आदमी कि मेरे बिना कोई काम नहीं चल सकता। मालिक का काम इस प्रकार का गोपनीय और शक्ति के साथ होता है कि वह अपने आदमी से भी सभी काम ले सकता है। इसलिए किसी आदमी को भी कभी किसी समय पर भी यह ध्यान और यह विकार मन के अन्दर नहीं ले आना चाहिए कि बाबा जी का बगैर मेरे नहीं चलेगा। मैं अपना काम नहीं समझता हूँ मैं तो मालिक का खुद ही समझता हूँ।

मैंने कभी क्षोभ प्रगट नहीं किया

और मेरे ऊपर में जो गालियों के पहले प्रहार होते रहे मैंने कभी भी अपने मन में किसी के प्रति भी यानी क्षोभ प्रगट नहीं किया। लोगों को यही सान्त्वना दी कि वह भूले हुए हैं, अगर उन्होंने कुछ कह दिया तो डाक्टर जब दवा देता है तो रोग के कारण डाक्टर तो दवा अच्छी देता है कि मरीज अच्छा हो जाय लेकिन वह दवा उसको कड़वी लगती है तो डाक्टर को गाली देता है। और तमाचे भी मार देता है। तो मैं जानता हूँ कि दुनियां को रोग हो गया है। दवा तो मैं इनको अच्छी देना चाहता हूं इनका रोग कट जाय और यह स्वस्थ हो जांय और आराम इनको मिल जाय। लेकिन रोग के कारण महात्माओं का हमेशा। कबीर हों, नानक हों, राम हों, कृष्ण हों, मुहम्मद हों, ईसा हों सबको गाली। तो यह तो महात्मा ही बर्दाश्त करके जाते हैं और भक्त बर्दाश्त करते हैं।

आदेश की सेवा करनी है

लेकिन आप अपने आपको यह समझें कि मुझे जो आदेश मिला उस आदेश की मुझे सेवा करनी है तहे दिल से, दिलोजान से। और उस सेवा में आत्म समर्पण अपने को हो जांय तो इसकी आपको चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं। क्यों कि यह बात हमेशा इस तरह से कफन बांध करके करना है कि मुझे मरना है। सुबह सेवा करके अगर कफन बनाकर के मरूं तो फिर मेरा कोई नुकसान नहीं। यह बात आपको ध्यान में रखनी है। अपने को बलिदान होना है सेवा करते हुए।

कुछ लेकर के भी जाओ और सेवा का यश भी प्राप्त कर लो। और हंसी खुशी से जाओ।

अच्छे काम में डरना नहीं

डरने की कोई जरूरत नहीं। जो अच्छे काम करते हैं उन्हें कभी डरना नहीं चाहिए। जो लोग एक साल के पहले डरे वह अपनी परिस्थितियों से डरे लेकिन उनको कभी भी अपने काम में डरना नहीं। अच्छा काम हमेशा अच्छा होता है और जो भक्त अपने आप को यानी जिन्दा लोगों ने उनको अपने गड़सों से और खड्ग से काटा और ऊपर को देख रहे हैं और उनका अंग-अंग काटा जा रहा है। आज उन्हीं की वजह से भारत में यह धर्म है। यदि वह शहीद हंसते-हंसते न हुए होते, भगवान के लिए, और धर्म के लिए तो आज उनका अस्तित्व ही खतम हो जाता। तो आज उनका नाम और आज धर्म भी स्थापित है। इसलिए डरने की कोई बात नहीं।

चमत्कार को नमस्कार

भगवान की शक्ति हमेशा भक्तों के साथ काम करेगी और उनको कभी डरना नहीं चाहिए। मैं इनको भविष्य के लिए ऐसी प्रेरणा देता हूं कि कभी भी आपको डरने की जरुरत नहीं। भगवान का चमत्कार वक्त पर हो जायगा और चमत्कार को नमस्कार। भगवान हमेशा अपने अस्तित्व को भक्तों के द्वारा स्थापित रखेगा और भक्तों की मर्यादा को छिन्न भिन्न नहीं होने देगा। यह भगवान का प्रण है। भक्तों की मर्यादा को यदि भगवान छिन्न-भिन्न हो जाने देगा तो बिल्कुल खतम हो जायगी। यह सारी सृष्टि फिर कुछ रह ही नहीं जायगी।

जल्दी टोलियां बना लें

इसलिए अपने आपको बिलकुल तैयार रखिए। आज्ञा का पालन और ग्यारह-ग्यारह आदमियों की टोली बनाओ। आप टोलियां बना लें जल्दी से जल्दी। जो लोग ऐसे होते हैं। जो सत्संग में नहीं आए और उन्होंने सतसंग का रास्ता भजन करने का नहीं लिया लेकिन उनकी दिली इच्छा रहती है कि मैं सतसंग से भी ज्यादा सेवा करूं। उनकी एक अलग आप टोली बना लीजिए। जो चाहते हैं उसमें यह रहेगा कि वेश-भूषा जब आप कभी समूह की तरफ चलें तो अपने वेश-भूषा में आएं। घर में आप कैसे भी रह सकते हैं वह तो अलग बात है कि आप नंगे घर में बैठे हो लेकिन बाहर निकलो समाज में तो वेश-भूषा के साथ निकलो।

भारतीय भाषा और रहन सहन अपनायें

भगवान पर विश्वास करो महात्माओं की बात को मानेंगे। सुनेंगे भी और मानेंगे भी। शराब और नशीली वस्तु अपने जीवन में कभी नहीं पीएंगे। साथ ही साथ में जाति भेद-भाव नहीं। मानवता के भाव को ले आना। और हिन्दी राष्ट्र भाषा का पूर्ण समर्थन। जब तक भारत में राष्ट्रीय हिन्दी जिसमें सभी गुण और विज्ञान हुआ वह जब तक भारत में स्थापित नहीं होगा तब तक आप भारतीय विज्ञान, उन्नति के शिखर का जो आनन्द है। उस चोटी का उसको नहीं ले सकते। तब तक आपकी बुद्धि और आपके भाव और इन्द्रियां आपकी छिन्न भिन्न और चलायमान रहेंगी तो जीवन का आपको कोई भी विकास सामान प्राप्त करके लाभ नहीं होगा। संतुष्टि नहीं होगी।

पूर्ण शाकाहारी रहें

तो हिन्दी राष्ट्र भाषा का पूर्ण समर्थन और पूर्ण शाकाहारी रहें। ऐसे नये लोगों को अलग। जब वह भगवान का रास्ता ले लें तो उसमें से फिर इसमें आ जाय। कुछ नहीं है। यह तीन चार बातें बड़ी सुलभ बड़ी सीधी-सादी इसमें कोई कठिनाई नहीं है।

Scanned with CamScanner

नये लोगों की भी टोली बनायें

तो नए लोग भी सेवा करना चाहते हैं और उनमें बड़ी भावना होती है और उस भावना पर धक्का नहीं मारना चाहिए। उस भावनाओं को उत्साह प्रोत्साहन देना चाहिए। गुदड़ियों में कभी भी लाल निकल सकते हैं। यह हमेशा ध्यान रखना चाहिए। नए आदमी में न मालूम कौन निकल आए। और क्या चीज प्राप्त कर दे ऐसी भावना। और बाकी सत्संगी जितने भी हैं वह जल्दी से जल्दी इस कार्य को काशी के कार्यक्रम के पहले ही पूरा कर दें।

फेरी निकालें

पहली अक्टूबर और दो अक्टूबर को एक कार्यक्रम अपना जो फेरी का बनाया जायगा। पहली अक्टूबर को देहातों में फेरी निकलेगी और काशी कार्यक्रम से अवगत कराया जायगा और सभी लोग सतयुग के आने का संदेशा और भक्ति और मुक्ति मिलने की बात। और वह कि ऐसा समय सतयुग जब आएगा तो ऐसा होगा, ऐसा।

सभी चीजें अवगत करायें

यह सभी चीजों से जो आपको मालूम होगी उससे अवगत कराना है। यह एक देहात में पहली अक्टूबर को एक फेरी निकलेगी। दूसरी अक्टूबर को शहर में। उस फेरी को आप लोग निकालें शहर और देहात के लोगों को अवगत कराएं। जो कुछ भी पेड़ों और पत्तों पर उसकी लिखाई हो उस तरह से उसकी लिखाई से भी अवगत करा दें।

किसान समझ लोगे तो स्वयं लिख डालेंगे

उसकी बहुत जरूरत और जब यह समझ लेंगे किसान कि हमारे लिए जब एक बीघा खेत में सौ मन गेहूं होगा तो यह काम तो मेरे सुख के लिए है। तो वह किसान अपने दरवाजे पर स्वयं लिख डालेंगे। ऊपर जयगुरुदेव भगवान का नाम। नीचे बाबा जी ने कहा कि सतयुग आएगा। फिर कहा कि किसान के एक बीघा खेत में सौ मन गेहूँ या चावल पैदा होगा और ऐसा ऐसा समय आएगा। यह सब चीजें हम लोगों को टोलियों के रूप में अवगत करा देनी हैं।

कोई कुछ कहे ध्यान न दें

इस सेवा कार्य में लग जांय और कोई आदमी अगर आपकी बुराई करे या कोई आदमी कुछ आपके लिए, उसके लिए जरा भी ध्यान मत दें। आपको ध्यान देना ही नहीं। आपको अपने काम से फुरसत होनी ही नहीं चाहिए और दूसरों के दूसरे फजूल के कामों को अपने सिर पर नहीं लेना है नाहक किसी चीज को खरीद करके अपने सिर पर नहीं रखना। दूसरे की चीज को उतार कर फेंक देना और अपनी चीज में पूरे माहिर और कामयाब हो जाना। यही भक्तों की हमेशा सफलता रहती है।

ऐसा हो राम के भक्तों ने किया

और राम के वक्त में जो काम उन्होंने किया वह इसी तरह का काम करके भक्तों ने दिखा दिया। अतिमगत्वा भक्तों के द्वारा ही देखिए क्या काम हुआ कि निशाचर और रावण का सफाया हो गया। वह तो आपने देखा ही है।

किसी के पास इतने प्रेमी नहीं

फिर किसी संस्था के पास। देश में कोई भी संस्था किसी प्रकार की हो दो करोड़ आदमी से ऊपर किसी के पास नहीं। आपको अपने ऊपर गर्व होना चाहिए कि भारत में इतना बड़ा काम करने के लिए दो करोड़ आदमी अभी। और फिर उसके काशी के कार्यक्रम तक एक करोड़ आदमी और। लगभग तो तीन करोड़।

Scanned with CamScanner

और ३१ मार्च सन ८० के अन्त में दस करोड़। किसके पास आदमी रहेंगे? हम कोई अनैतिक काम, न सामाजिक, न मानवता का कोई काम न देश का ऐसा करते ही नहीं। हम तो सब काम करते हैं।

जब समय मिले तो साधना करें

इसलिए आप जिस काम के लिए आये हो दर्शन भी देना और दर्शन करना भी। हीरे जैसे धन को इधर उधर फेंका जायेगा मोरियों पर जमीन में इधर उधर। तो थोड़ी देर के लिये बैठ जाओ। अपनी अपनी धोती को ओढ़कर के चद्दर को। जो बच्चियां हैं, माताएं हैं, बहनें हैं वह अंचला आगे कर लें। अपने कपड़े धोती को ओढ़ कर बैठ जांय। और मालिक की दया उसके दरवाजे पर बैठ करके खींचो उतारो, आने दो, मुंह खोलो, उसको पियो, दस मिनट पन्द्रह मिनट, आधा घण्टा बैठो। यह बहुत जरूरी है और फिर शक्ति को। तब शक्ति काम करती है अपना। फिर वही शक्ति जोहर दिखाती है। जब अच्छे लोग थे देखिये कितनी कितनी शक्ति लोगों में थी। अच्छे बन जाओ तो कितनी बड़ी शक्ति का प्रदान हो जायेगा। कितना बड़ा काम हो जाय। आल्हा-ऊदल के वक्त में। लोग कहा करते हैं कि आल्हा-ऊदल कौन बड़े अमर अजर थे। उस समय पर कैसी कैसी शक्ति थी लड़ते थे लोग। तो असल में न्याय की लड़ाई थी और उस न्याय के लिए लोग लड़ा करते थे।

पहले लोग न्याय की लड़ाई लड़ते थे

तो न्याय की लड़ाई जो होती है वह पहले तो अज्ञान की थी अब न्याय की लड़ाई ज्ञान की, अब मानवता की लड़ाई इस समय पर साथ ही साथ में उसमें धार्मिकता है, सदाचारता है तो उसको उभार आने दीजिए उसको। तीर-तलवार की लड़ाई की अब कोई जरूरत नहीं। अब तो मानवता की, लड़ाई अब ज्ञान और अज्ञान की। ज्ञान के द्वारा अज्ञान को काट दो। खतम कर दो और मानवता का विस्तार करो सब लोग इस तरह से संपन्न सुखी हों। तो मैंने आपको छोटा एक सतसंग सुना दिया। और मैं अब जिस जिलों में मैं घूमूंगा। मैं अभी योजना अभी बना रहा हूँ। सब लोगों को खबर जगह। मैं एक डेढ़ महीने के करीब उत्तर प्रदेश में दौरा करूंगा। अधिकांश सतसंग गांव में शहर में बहुत कम। नाम मात्र को कहीं भूल भटक से शहर में हो जायगा। बाकी कार्यक्रम सब देहातों में।

सभी झोपड़ियों में रहने वाली जनता को जगाओ

मुझे तो भारत की उस मानव जन को सीख देना है जो झोपड़ियों में सो रहे हैं। उनको वहां से जगा देना। और इसी की जरूरत थी। क्यों कृष्ण को इधर जाना पड़ा? क्यों राम को इधर जंगल की ओर जाना पड़ा? क्यों बुद्ध को राजधानी छोड़नी पड़ी? क्यों इनको जंगलों की ठोकरें खानी पड़ी? तो वह जानते थे कि चीज जो है पड़ी हुई। वह पड़ी, जंगलों और झोपड़ियों में। वहां जाकर के उन्होंने उनको जल्दी से उठा दिया और लोगों को समय पर चीज मिल गई।

आपकी टोलियों के काम आगे देखूंगा।

लेकिन यह मैं वहां देखूंगा कि आपने अपनी योजना टोलियां बनाकर के ग्यारह-ग्यारह आदमियों की किस तरह से बुद्धि का विकास किया है? यह मुझे देखना है। मुझे कुछ नहीं बताना। काम सब आपको अपनी बुद्धि से करना है। और किस खूबी के साथ में किस जिले में कितना अच्छा काम हो रहा है। उसकी भी एक सराहना का काम। कौन

Scanned with CamScanner

जिला इतनी जल्दी उठता है यह अपनी-अपनी जगह पर आपको स्वयं ही कार्य अपने प्रेमी जो हैं इकट्ठा करके और बिलकुल काम शुरू कर दें। अब इसमें देर करने की जरूरत नहीं है। और जल्दी से जल्दी इसको पूरा करें। फिर उसके बाद जब यह कार्य आपका पूरा हो जाय तो फिर उसको आदेश विस्तृत रूप से लोगों को मिलेगा। काम तो होना ही है कुछ न कुछ। जयगुरुदेव।

यह जो कार्यक्रम है इसको अखबार वाले भी उतार लेंगे और जो अपने-अपने को जाना चाहेंगे उसको यह साफ कागज पर उतार कर इनको दे दो। यह उतार लेंगे और बाकी जो है यह आपको मालूम है। अभी इधर कार्यक्रम होने जा रहा। आप इस कार्यक्रम को करने के बाद ससङ्ग हो। भजन करने बैठना है, आपको ध्यान पर।

देश दुनियां का नक्शा बदल जायेगा

देशवालों! नया एक सन्देशा सुनो, इस धरा पर ही "सतयुग" उतर आयेगा।
है नहीं वक्त ज्यादा कुछ ही वर्षों में देश दुनियां का नक्शा बदल जायेगा॥
जयगुरुदेव की है ये पेशेनगुई वक्त नाजुक बहुत सामने आ रहा।
जितने पापी-कुकर्मी हैं दुनियां में अब इनका नामो निशां भी न रह पायेगा।
चेतो प्यारे सभी! धर्म पर आ डटो उस खुदा की नबी की इबादत करो;
बर्ना सतयुग के आने के पहले ही बच्चा तेरा "कचूमर" निकल जायेगा।
सतयुग आने पर बीघे में १०० मन मिले और कोई दुखी भी न रह जायेगा,
सबमें मानव सदाचार आ जायेगा धर्म का राज भारत में छा जायेगा॥
३० रु० में भी सोना बिक जायेगा दूध घी की सुधा धार बह जायेगी,
चूड़ियों में भी हीरे जड़े जायेंगे ऐसा सुन्दर सुगम वक्त आ जायेगा।
जो भी पैगाम अब तक सुना आप ने वो सभी आँखों के सामने आ गया,
थोड़ा धीरज धरो, नेक करनी करो वर्ना "कुदरत का थप्पड़" भी लग जायेगा।
ऐसे "सतयुग" के आने की अगवानी में गांव वालों! नया एक सन्देशा सुनो,
इस धरा पर ही सतयुग उतर आयेगा।
है नहीं वक्त ज्यादा कुछ ही वर्षों में देश दुनियां का नक्शा बदल जायेगा॥

राम-नाम रूपी मणि

(जन्माष्टमी की रात्रि का सतसंग २६-८-७८ के० पी० कालेज, इलाहाबाद)

राम नाम मणि जीव धर, जीव देहरी द्वार।
तुलसी भीतर बाहरो, जो चाहे उजियार॥

अन्दर और बाहर राम नाम रूपी मणि को जगा लिया जाय। प्रगट कर लिया जाय, तो मणि में रोशनी, प्रकाश, Light का समूह है। बहुत तीव्र उसमें रोशनी, मणि में से, निकल रही। वह कुदरती मणि, कोई सांप की, और हीरे जवाहरात की नहीं। वह स्वाभाविक मणि है। उस मणि को कोई नहीं बना सकता है। अनादि काल की मणि, आप सभी के पास। जब तक वह मणि आप को नहीं मिलेगी तब तक आप हमेशा बेचैन, व्याकुल और निराश रहेंगे।

इसी मणि के लिए नाना कष्ट सहे

इसी मणि को प्राप्त करने के लिए महात्माओं ने नाना प्रकार के कष्ट सहन किए और साधनायें की। त्याग, वैराग सब कुछ उन्होंने इस शरीर से किया। और किसी किसी को यह मणि मानव तन में उपलब्ध हुई। और उस मणि में आनन्द, ज्ञान प्रेम और शक्ति, सुन्दरता भरी हुई।

उस मणि के बोध के लिए गीता ने रामायण ने, भागवत ने, सन्तों महात्माओं ने सबने विवेचन किया, आपको बताया। उसी मणि को प्राप्त करने के लिए सारे देश में आज यह त्योहार मनाया जा रहा। उसी मणि की उपमा मुहम्मद ने चन्द्र के चांद से की। और कृष्ण भगवान के मुकुट में, वह चांद बना हुआ। मोर मुकुट में। बराबर उसका यह सूचक है और चिन्ह है। इसमें ऐसी अद्भुत जवाहरात रतन हर मानव के पास दबे पड़े हुए हैं।

त्योहार मनाये पर उसका बोध न हुआ

लेकिन वास्तविकता तो यह है कि इतने त्योहार मनाने के बाद भी इन त्योहारों का बोध न हो तो ऐसा मालूम होता है कि हम लोग त्योहार भूल गए इन त्योहारों को क्यों मनाया गया था और अब हम क्या उनसे पाते हैं और क्यों मनाते हैं। तो भूल गए। फिर महा पुरुषों की जरूरत है कि दोबारा उन त्योहारों को फिर ताजा करें और लोगों को यह बताए कि त्योहार क्या है और बना लिया रात को उसके बाद में ऐसी चीज नहीं थी यह तो सदा के सर्वदा के त्योहार थे।

अब मैं आपको थोड़ा सतसंग सुना दूं। समय बहुत थोड़ा है। आप सभी लोगों को थोड़े समय के बाद में अपने अपने घर प्रस्थान कर जाना है। तो सतसंग थोड़ा सा आप को।

सेवक बनने के लिए गुरु के पास जाना होगा

कल आपको मन की गति और जीवात्मा के जागरण का यह भेद थोड़ा सा बताया। वास्तव में सर्वप्रधान बात यह है कि मुरीद जभी बनोगे जब मुर्शिद का सम्बन्ध होगा।

Scanned with CamScanner

सेवक जमी बनो गुरु आदेश का पालन। फकीरों और महात्माओं ने आपको जो जो बातें बताई उनकी तालीम, शिक्षा को हम सब लोगों को समझना चाहिए। जब हम लोग इसको भूल जाते हैं तो हम लोग सब अपने-अपने फकीर और महात्माओं, मुर्शिदों और गुरुओं से बहुत दूर हो जाते हैं। और इसी वजह से हकीकत और वास्तविकता अपने जीवन में हम लोगों को नहीं मिल पाती। और हम लोग अपने जीवन से बिलकुल निराश हो जाते हैं।

अब सबको अपने धर्म में आशा आई

और अब धीरे-धीरे हिन्दू, मुसलमान, ईसाईयों में एक आशा आई। अपने-अपने मजहबों, धर्मों की किताबों को देखने लगे और सभी लोग इस पर विचार करने लगे कि महात्माओं ने आगे आने वाले समय के सम्बन्ध में क्या क्या नसीहतें बातें हमको बताई और याद कराई।

हर मजहब में महात्मा उस ज्ञान को जानते हैं

अब यह बात इस थोड़े से दिनों में सारे हिन्दुस्तान में हिन्दू, मुसलमान, ईसाइयों में फैलने लगीं। कोई बात जरूर है। हर मजहब और हर मजहब के फकीर, साधू, महात्मा हर बातों को जानते हैं। उनको हर इल्म का ज्ञान है। हर भूत, भविष्य, वर्तमान सभी विद्याओं का बोध है। यह हमको किताबों में और महापुरुषों ने बताया और लोगों को यह मालूम तब होने लगा जब प्रेम उस मार्ग शिक्षा की तरफ चलने लगे और उनको भी थोड़ी बहुत अनुभूति प्राप्त होने लगी और उसमें उनको बोध होने लगा तो यह विश्वास आया कि महात्माओं की पुस्तकें सत्य हैं।

हम अपने से उन पुस्तकों को नहीं समझ सकते

हम भटक रहे हैं हमको रास्ता नहीं मिलता

हममें इतना ज्ञान नहीं है कि महात्माओं की पुस्तकों को समझ सकें। इसलिए धीरे-धीरे, धीरे-धीरे इस वस्तु को जानने के लिए अब निकट में लोग आने लगे। और जितने ही निकट में आएंगे जाएंगे उतना ही वह वस्तु लोगों को उपलब्ध जीवन में हो जायगी। उसका आनन्द और ज्ञान जिससे कि आगे और पीछे और अब क्या है यह सब बोध हो जायगा। नहीं तो बड़ा मुश्किल था।

मुसलमान भाई कभी बुराई नहीं करते

एक विशेष बात यह है कि मैं चारों तरफ, चारों दिशाओं में इस सनातन, आध्यात्मिक जीवात्माओं का प्रचार करता हूं लेकिन मैंने किसी भी मुसलमान भाई को इसकी बुराई करते हुए नहीं सुना। ऐसा मालूम होता है कि वह हकीकत के बड़े ग्राहक हैं। उनको हकीकत से बड़ी दिलचस्पी है। इसलिए मजहब हकीकत रूह और खुदा के बारे में उनको कुछ नहीं कहना। वह उनको बता दिया गया है कि आगे बन जाओ खुदा के लिए कि खुदा है, हकीकत है, रूह है। और वह इस सम्बन्ध में अपने जबान को अपने कलाम को बन्द रखते हैं। यह बहुत बड़ा गुण है।

हिन्दू वास्तविकता को समझें

हमारे हिन्दुओं में हकीकत की तो कोई, वास्तविकता की तो कोई खोज नहीं। जानने की चेष्टा करेंगे नहीं। जानते तो कुछ हैं ही नहीं। और बस बात। किसी के मजहब, किसी की बात को कहना शुरू कर देंगे। और फिर उस पर जब कोई जवाब दे देगा तो लज्जित हो जायेंगे। आप को लज्जित होने की जरूरत नहीं। हर चीज को जानने की आप कोशिश करें। भारत भूमि यह सेन्टर है। एक ऐसा स्थान है। यहां हर प्रकार की शिक्षाएं

आपको मिलेंगी और जब से आप जन्मे और जब तक आपका शेष नहीं हो जाता है तब तक इस भारत भूमि की शिक्षा को अध्ययन करते रहिए और तब भी आप को यह गूढ़ शिक्षा प्राप्त नहीं हो सकती। यह अपूर्ण स्थान है और फिर चन्द रोज़ा ४०-५०-६० वर्षों की। और इसी में आप यह समझ लेते हो कि हमने सब कुछ जान लिया और कुछ नहीं जानते हो।

यह कमी आ गई

बस यह है बहुत बड़ी कमी। इन दिनों में आ गई। पहले तो लोग एक एक बात महात्माओं की ध्यान से सुनते थे उस पर अमल विश्वास भी करते थे। वैसा उनको शांति का, सुख का अनुभव भी मानवता का परिवार में होता था। लेकिन अब बड़ा मुश्किल हो गया। वो अब महापुरुषों के दो कलाम सुन लीजिए। थोड़ी देर में तो मैं बन्द कर ही दूंगा।

गुरु दरियाव चलो सुर्त सजनी।
मन की लहर सम्हार॥

कहते हैं कि ऐ सुरत, ऐ जीवात्मा, तू अपनी सखियों को लेकर के और दरिया की तरफ चल। जब दरिया से तेरा सम्बन्ध हो जायगा तो समुन्द्र में पहुँच जायगी। बड़ी बड़ी दरियाओं का पानी छोटी दरिया से बड़ी दरिया में और बड़ी दरिया का पानी समुद्र में चला जाता है।

सखी है शील क्षमा इत्यादि

तो सखी कौन है सुरत की? शील, क्षमा सन्तोष, विरह, विवेक। ये सुरत की जीवात्मा रुपी यह सखी है, सहेली। कहते हैं ऐ सुरत! तू इनको बराबर साथ ले ले। और वह जो दरिया बह रहा है, जो गुरु ने स्रोत बहा दिया, उसके साथ तू जोड़ दे।

ऐसे ही समय भगवान कृष्ण का जन्म हुआ

मन की लहर में मत जा। यह वह मन की लहर है, भादों की काल की काली रात। उसमें कुछ भी नहीं दिखाई देता। ऐसी काली रात्रि के समय में कृष्ण भगवान का जेल में जन्म हुआ। ऐसे ही जीवात्मा रुह, दोनों आंखों के पीछे बैठकर अनेकों जन्मों की गन्दगी से उसने काली रात्रि भादों की बना दिया। अब महा पुरुष जब कभी भी मिल जाते हैं तो कहते हैं कि ऐ सुरत! तू गुरु के दरिया की तरफ सखियां को लेकर चल। मन की लहर को छोड़ दे।

गुरु कृपा से स्नान कराते हैं

मन इन्द्रियों के दरवाजे पर बैठकर के भोगों की तरफ यह लेकर के चला जायेगा और बहा देगा। और उधर तुझे कुछ भी नहीं मिलता है क्योंकि यह तो भादों की काली रात्रि है। रात को दिखाई नहीं देता। कुछ समझ में नहीं आता है। काम, क्रोध लोभ, मोह, अहंकार इनको मारने के लिए शील, क्षमा, सन्तोष, विरह विवेक। यह सुरत की जीवात्मा की, रुह की सखी सहेली हैं। जिन्होंने इनको साथ ले लिया वह दूध की दरिया में अपनी सुरत को, जीवात्मा को, रुह को लेकर स्नान कराते हैं।

भगवान की वेद वाणी आ रही है

और बड़ा निर्मल, खुदा का वह आसमानी कलाम जिसको आयत कहते हैं—कलमा। भगवान की वेदवाणी, आकाशवाणी, ब्रह्मवाणी में इन सखियों को लेकर सुरत स्थान करती है। ऊपर से धारा बह रही, आ रही। खूब अच्छी तरह से नहाओ और फिर उस आनन्द में कूद कूद करके हिलोरें लो। ऐसा दरिया तुम्हारे मनुष्य रुपी मकान में वह रहा है लेकिन घाट तुमने बन्द कर दिया। जल्दी से जल्दी घाट को खोलो।

Scanned with CamScanner

अंजन लेकर रगड़े मारो

दिन में काम बच्चों की सेवा किया शाम को बच्चों की सेवा। जड़ी को अंजन को, औषधि को हाथ में लो। रात को मारे दो चार रगड़े। मन को, बुद्धि को, चित्त को इधर से समेट कर शील, क्षमा, सन्तोष, विरह लेकर ओर घाट पर बैठा दिया और दो चार रगड़े मारे। उसी में पहाड़ों की पहाड़ गन्दगी उतरती हुई चली जायगी और यह दरवाजा खुल जायगा। जब दरवाजा खुलेगा तो जो कुछ सामने अनादि काल से हो रहा है।

मोहि विलोकि राम मुसुकाहीं ।
विहँसत तुरत गयऊँ मुख माहीं ॥
उदर माँझ सुनु अंडजराया ।
देखेऊ बहु ब्रह्मांड निकाया ॥

सब चीजें ज्यों की त्यों आपको वैसी ही जो अनादि काल सनातन से हो रही हैं सब आपकी दृष्टि, दिव्यनेत्र ज्ञानचक्षु, शिवनेत्र से दिखाई देने लगे।

माया ने बहार की आंख से फंसाया

लेकिन जब तक आप इनको बांध नहीं लेंगे तब तक नर-नारियों आपके लिए कठिनाई है अन्दर की दिव्य आंख पर बाहर की माया आदिक दो आंखें लगा दी माया ने। और कहा कि अन्दर की आंख को तुम बैठकर हिलाती रहो यही तुम्हारा काम है। तो बाहर की दो शरीर में जो आंखें हैं माया की वह ऊपर बैठ गयी और अन्दर वाली आंख को जो ज्ञान चक्षु है उसको हिलाती रहती है। सामने सब कुछ होते हुए भी जब आंख हिलती रहेगी तो कुछ नहीं दिखाई देगा। इसलिए हे सुरत तुम सखियों को साथ ले लो।

चित से चेत खेत को जीतो।
यह औसर नहिं बारम्बार ॥

यह दुर्लभ मनुष्य शरीर

कहते हैं चित्त से चेतो। और मानव शरीर एक खेत है। यह मनुष्य शरीर का बार-बार आपको अवसर नहीं मिलेगा। यह खेत है, चित्त से चेत जाओ। यह फिर नहीं मिलेगा भवसागर रूपी नदी को पार करने के लिए आपको थोड़े दिन के लिए काल भगवान ने यह अवसर दे दिया बड़े भाग्य से। अब चेत जाओ चित्त से कि जाना है। आने के पहले अपना यह काम करना आवश्यक था सबके लिए।

चेते नहीं और गन्दगी भर लिया

लेकिन चित्त से चेते नहीं। मानव तन रूपी खेत अनमोल आपको थोड़े दिन के लिए मिल गया इस खेती में आपने क्या भरा है। इस भाड़े में बर्तन में। सिवाय गन्दगी के और कोई अच्छी चीज नहीं। तो बदबू नहीं आयेगी तो क्या सुगंधि मिलेगी। अरे सुगंधि भरोगे तो सुगंधि मिलेगी।

अच्छा करो तो अच्छा मिलेगा

अच्छी आंखों से देखो, कानों से सुनो, वाणी से बोलो, बुद्धि से अच्छे विचार करो, मन से काम करो शुद्ध संकल्प इस बर्तन में अच्छी-अच्छी चीजें भर लो। तो आंख का सुख लो, कान का लो। जिह्वा का लो, मन का लो, बुद्धि का लो। शरीर का यह ले लो। लेकिन जब इसमें गन्दी वस्तुएं भरोगे तो इसकी हर लोहू और नाड़ी में जब यह गन्दी चीज जज्ब नहीं होगी तो बस समझ लीजिए फिर बीमारी नहीं तो क्या।

यह अवसर बार बार नहीं मिलता

इसलिए चित्त से चेतो खेत को जीत लो। मानव शरीर को अबकी बार काम में ले लो यह है जीतना। सहेली को साथ लेकर के और तुम

Scanned with CamScanner

इस दरिया में स्नान अबकी बार कर लो। तुमने यह अवसर जीत लिया। यह अवसर मिले न बारम्बार। बार बार नहीं मिलता।

सहजो कारज जगत कै गुरु बिन पूरे नाहिं ॥
हरि तो गुरु बिन क्यों मिलें समझ देख मन पांहि।

यह सबका भूल भरम है

दुनियां के जितने भी काम हैं वह बगैर गुरु के, बगैर उस्ताद और मास्टर के नहीं होते। तो परमात्मा बगैर गुरु और मास्टर के मिल जायगा? यह भूल है हिन्दू, मुसलमान, ईसाईयों की। मुर्शिद के पास जाना पड़ेगा। उसके अपने कदमों में यह रखना होगा। और उसे ऐसा सिजदा करना होगा कि सब कुछ उसका हो जाना। अपना कुछ न रहे।

खुदी को मिटाओ तो खुदा मिलेगा

खुदी को मिटा दे खुदा मिल जायेगा। जो अपने आप को मिटेगा नहीं वह क्या पायेगा? जिन्होंने खुदी को मिटा दिया खुदा मिल गया। वह फकीर बन गया। और खुदी मिटी नहीं खुदा कभी मिला नहीं। कितना भी बक-बक करते चले जाओ व्यर्थ। बेकार और बर्बाद है।

यह भजन करने का अवसर मिला

तो चित्त को चेतो चित्त को जगाओ, चेतो और इस खेत को जोत लो। यह नर तन नहीं मिलेगा। यह भजन करने का सुअवसर नर-नारी, बच्चे बच्चियों को दिया।

तेरा भाग बड़ा गुरु किरपा।
न्हाओ अमृत धार ॥

कहते है, तुम्हारा भाग्य, महान पुरुषों की दया से बढ़ता चला जायेगा। और वह समय जभी आ जायेगा जब अमृत में स्नान करोगे।

अमृत जल है पर यह जल नहीं

अमृत वैसे तो जल है लेकिन यह जल नहीं। यह पानी नहीं, वह दूसरा है जिस अमृत को पीकर अमर हो जाते हैं वह अमृत तुम्हारे अन्दर है लेकिन उसका स्रोत आपने बन्द कर दिया। वैसे वही अमृत है जो गोस्वामी जी महराज ने कहा कि

सुना वृष्टि भई दोऊ माहीं।
जिये चालु कपि निश्चर नाहीं ॥

काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार यह सब मूर्छित हो जाते हैं जब खुदा का दो दल कमल में जब स्रोत खुल जाता है और बूंद-बूंद जब चूता है और सुरत मन जब उस अमृत को पीते हैं तब इनको मूर्छा आ जाती है। बेहोश हो जाते हैं। फिर काम, क्रोध, लोभ, मोह अहंकार काम नहीं कर पाते। अपने उत्पात का। इसको कहते हैं निशाचर।

जब तक स्रोत नहीं खुलेगा अमृत नहीं मिलेगा

जब तक स्रोत नहीं खुलेगा तब तक यह अमृत पीने को नहीं मिलता। और मनुष्यरूपी अन्दर मकान में उसका दरवाजा है। वहीं से जीवात्मा निकल कर ऊपर की तरफ चल देती है। बड़े बड़े खुले हुए मैदान। बड़ी खुली हुई रचना। अन्धे आदमी को आंख खोलकर सामने खड़ा कर दो कहेगा यह बहुत बड़ा बिल्डिंग मकान है। उसने तो ऐसा मकान कभी नहीं देखा। जब वह दिव्य नेत्र ज्ञान चक्षु खुलता है तो कितने बड़े-बड़े लोक। बड़े बड़े शहर। बड़े-बड़े बाग बगीचे। और बड़े-बड़े दरिया। सूरज और सितारे जब दिखाई देते हैं तो आश्चर्य करता है ईश्वर की लीला का कि यह क्या है?

सब चीजें आप के पास थी लेकिन आप ने उसकी खोज बन्द कर दी इसलिए आप दुखी

Scanned with CamScanner

हैं। असली चीज तो वह है। तो आप जाग जाओ। समय अब आ गया है तुम्हारे जागने का। यह अवसर बारम्बार मिलेगा नहीं. अब ऐसे अवसर को खोना मत।

मोती चुनो हंस गति धारो।
चढ़ो अंड के पारा॥

वे हीरे लाल पत्थर के नहीं होते

कहते हैं कि भोजन क्या होगा? मोती, हीरे और लाल इनको चुन-चुन करके खाओ। यह पत्थर वाले हीरे लाल नहीं। वह और होते हैं। उन हीरे और लालों की उपमा अब कैसे कही जाय। जो तोड़ तोड़ करके खाते हैं। ऐसे ऐसे वृक्ष जो अरबों-खरबों यानी मोज की बुलंदी रखते हैं। इतने ऊंचे हैं नीचे से ऊपर निगाह नहीं पहुच सकती है। इतने लम्बे-लम्बे वृक्ष और उस जंगल में कितने वृक्ष? जिन पर लगे हुए एक एक डाली के ऊपर में अरबों खरबों सूरज। और एक-एक सूरज के ऊपर में अरबों खरबों सूरज कहते हैं निछावर हो जायंगे।

यह है महिमा उधर की

यह है एक एक वृक्ष एवं डालियों की महिमा। और वह जब जब किसी समय आप वहां से आए भेजे गये थे तब वह सब आनन्द आप छोड़वे आए। यह कहा गया था जाओ मेरे कहने से। वहां एक नयी दुनिया देखना। क्या अनुभव करना और जल्दी से जल्दी तुमको अच्छा न लेंगे तो फौरन अपने वापिस रवाना घर हो जाना।

संसार के विधान बना दिये

वहां से आए आप ने देखा। कोई रोता है कोई जाता है कोई आता है। इधर से उधर लाने लगे कि यह तो बड़ा कूड़ा कचड़ा है यहां तो कुछ नहीं। तो फौरन जो उधर से लाया था मन उसने विधान बना दिया। और विधान में कहा है कि नहीं जाते। और आप किस रास्ते से जाओगे। यह काम करेगा वह नहीं जायेगा। जो यह काम नहीं करेगा वह इधर से नहीं जाएगा।

यहाँ कुछ किसी का नहीं सब अज्ञान में फंसे हैं

बस धीरे २ धीरे २ वह राते के काम आप ने बन्द कर दिये। रास्ता आपका बन्द हो गया। जहाँ से आए थे वहां जाना भूल गये। अब यह है परदेश, मुसाफिर खाना। यहां न कोई अपना है और न अपना हुआ कभी। वैसे सभी कहते हैं मकान जमीन मेरी। सोना चांदी मेरा। राज पाट मेरा। लेकिन है यहां वास्तव में किसी का नहीं। यह अज्ञानता का ढिंढोरा है। तो ठीक है। वास्तविकता तो कुछ और है। यह घर तुम्हारा होता तो तुम क्यों बूढ़े होते? घर तुम्हारा होता बच्चे क्यों जाते। चीज तुम्हारी होती पुरानी क्यों होती? हमेशा नई और ताजी रहती।

यह स्थान परदेश है

इसलिए यह स्थान परदेश है। जहां से आए वहां जाने की तैयारी करो। जल्दी से जल्दी अपने घर में थोड़े ही समय, काल जो आपको अमोलक मिला है उसमें पूरा करो। और घर को चलो। इन सब चीजों को छोड़ दो इन सब चीजों को काम में भी ले लो छोड़ने का मतलब है, समझ लो। समझ लागे पूरा ज्ञान हो जाएगा।

कर्तव्य परायण हो जाओगे

किसी चीज में भी कोई ममता नहीं। कर्तव्य परायण हो जाओगे। जब कर्तव्य करोगे तो किसी चीज में फंसोगे नहीं। आपको मालुम हो जाएगा। बच्चा भी जाना स्त्री भी जाना। हमको भी जाना इनको भी जाना। उनको भी जाना। वास्तविकता का ज्ञान हो जाएगा। जाते वक्त में घबड़ाओगे नहीं खुशी से

Scanned with CamScanner

चली जाओगे। रास्ता धीरे धीरे। न अपना कोई सामान है। यहां से तो जाना ही था। आज नहीं तो कल। कल नहीं तो दूसरे दिन इस तरह का भौतिक बुद्धि का ज्ञान हो जाया करता था।

इसी ज्ञान से लोग जग जाते थे

और इसी ज्ञान के द्वारा लोग अन्दर में जग जाते थे। जीवात्मा को जगा लेते थे। अन्दर का जीवात्मा का बोध और यह बुद्धि का दोनों ज्ञान प्राप्त हो जाते थे। लोक का भी सुख और परलोक का भी सुख। दोनों सुख। यह घर पाया। उस घर को छोड़ दिया तो अब न इधर कुछ मजा ने उधर कुछ मिलता। उधर भी भूल गए इधर भी फंस गये।

खण्ड खण्ड ब्रह्मड पसारा।
निरखो नयन निहार॥

अन्तर की रचना बड़ी मोहक है

कहते हैं कि अनेकों ब्रह्मण्ड है। उनको देखते चलो, चलते चलो उन ब्रह्माण्डों का।

अति विचित्त तह लोक अनेका,
रचना अधिक एक ते एका।"

अद्भुत विचित्र जो लिखने में नहीं आ सकते ऐसे रचना से पूर्ण बड़े बड़े दिव्य दिव्य लोक हैं खण्ड खण्ड में। इससे उसमें पहुंचो। उससे उसमें पहुंचो। इस तरह से चलते चलो चढ़ते चढ़ते-चलते चलते अपने घर चलो और यह लीला देखते चलो। चढ़ते चलो देखते चलो। अनुभव होता चलेगा। सारा आदि से लेकर अन्त तक का विस्तार महापुरुषों ने देख लिया, जान लिया समझा दिया समझ लिया। और लोगों को बताया लोगों को चढ़ाकर ले गये। इसी तरह से जीवन का काम अपना बन गया। हम लोगों को यह सौभाग्य से अवसर सुनने के अब प्राप्त होने जा रहे।

तब अवसर नहीं था

मैं अभी तक इस लिएसत्संग आप को नहीं सुना पाया था कि वह उस समय पर इसी सत्संग को सुनाता तो आप की समझ में भी कुछ नहीं आता। या तो मुझे पागल करार कर देते या अपने आपको पागल हो जाते। हम यह चाहते थे कि आप भी पागल न हो और हमको भी आप पागल न करार कर दें। हम आप से दूर हो जांय आप हमसे दूर हो जांय। दोनों भार उठा लें।

फुटकर शब्द सबको समझ में आते हैं

जो हमारी सेवा वह हम कर लें। जो आप की सेवा आप कर लें। इससे जीवात्मा का सच्चा वतन घर, सच्चा देश इससे मिल जाय। तो वह दिन समय अब सुनाने का आगे आ रहा। बहुत निकट ही अब आ गया है सुनाने के लिए। वह चीजें भारत वर्ष में आपको जिस शैली में अब चाहेंगे मिल जाएगी। घबराने की कोई बात नहीं है। वैसे तो हम इन फुटकर शब्दों को इसलिए इस्तेमाल करते हैं कि सबकी समझ में आ जाय। शैली सबकी समझ में नहीं आएगी। विद्वता के शब्दों का यदि उच्चारण किया जाए तो सबकी समझ में नहीं आयेगा क्योंकि उसका अर्थ सब लोग बुद्धि से नहीं समझ पायेंगे लेकिन फुटकर शब्दों को यदि समझाया जाय तो बात समझ में आ जाएगी और अध्यात्मवाद की सीढ़ी पर आ जाएंगे। और फिर उसके बाद जब वह वर्णन किया जाएगा तो फिर सबकी समझ में आ जाएगा। लेकिन जब तक उठाकर के ऊपर वाले क्लास में न ले आया जाय तब तक इतनी परा विद्या का आप को कैसे ज्ञान होगा।

प्रभु की कृपा का वक्त आ रहा

तो धीरे-धीरे धीरे-धीरे वह वक्त व समय

हम लोगों के प्रभु की दया से, भगवान की कृपा से आ रहा है और ज्यों ज्यों उसकी कृपा होती चली जाएगी वैसे ही जल्दी से जल्दी पूर्ण सुगम और सुलभता हम सब लोगों के लिए हो जायेगी। हमने कुछ समय पहले, एक साल के पहले, यह बताया था कि एक वक्त और समय आएगा कि सब लोगों के लिए एक ध्यान केन्द्रित बन जाएगा। और सभी लोग यहां से स्वर्ग जो उधर है, चलने की तयारी में लग जाएँगे। वही लोग जायेंगे, आएंगे। इस तरह का पहले आप को समझाया था कि वह वक्त आगे आपके लिए आएगा। और धीरे धीरे आ जाएगा।

दिन में घर का काम किया शाम को बच्चों की सेवा की। कोई समय आपको काम का नहीं। बैठ गये। आंख को बन्द किया। चदर डाल ली और निकल गये अन्दर की आंख से दिव्य नेत्र, ज्ञान चक्षु, सुरत से, रूह से, जीवात्मा से उधर का पूरा आनन्द बहिस्त का, बैंकुठ का लेते रहे। घण्टे दो घण्टे आनन्द ले करके वापिस आए। काम किया बच्चों की सेवा।

खाकपति को भी कोई चिंता नहीं

फिर बैठ गये निकल गये उधर और उसके बाद चाहे कितना भी खाकपति हो, लेकिन उसके चेहरे पर कोई भी शिकन आप यह नहीं देख सकते कि किसी तरह की उसको चिन्ता। वह बालुका के हर कण को नाशमान समझ लेगा। उसको जरा भी छू करके भी कहीं। छुई मुई की तरह से उसको मुरझाने की बात नहीं।

गरीबी लाख नियामत है

कितना बड़ा आध्यात्मिक ज्ञान लोगों को आगे चल करके प्राप्त हो जाएगा। गरीबी कोई चीज नहीं है। महात्मा तो हमेशा गरीब ही रहे। वह जंगल में लंगोटी लगाकर रहते थे। बड़-बड़े बादशाह उनके कदमों में अपना सर मस्तक सिजदा करते थे। क्यो जाते थे? कोई बड़ी वस्तु होगी तभी जाया करते थे। और मस्त रहते थे। उनके पास तो कुछ भी नहीं था लेकिन देखिये उनको कहीं शिकन नहीं। क्यों नहीं शिकन? क्योंकि उनका उनका बोध था। वह अमोलक जवाहरात उनको, वह धन उनको मिल चुका था। चौबीसों घण्टे वे प्रसन्न खूब हँसते, मगन रहते थे।

ढिंढोरा सोच समझ कर पीटा

ऐसी विधि परमात्मा की कृपा से और उसका समय कभी कभी मिला करता है। हमने कोई ऐसे अच्छे समय का ढिंढोरा भूल में और भटक में नहीं पीटा। कुछ सोच के समझ के। और कुछ आदेश मिला है कि वह ढिंढोरा आगे के समय का पीटा। तो ऐसा समय आएगा कि आप सबके सब बहुत दूरदर्शी विचारों को बनायें।

यह स्कूल अनुकूल स्थान है

यह स्कूल है यहां के अध्यापकों ने बड़ा अच्छा सहयोग दिया आपको। उन्होंने स्थान दिया। हम और आप सबको उनके आभारी रहना चाहिए। वैसे इस विद्या को प्राप्त करने के लिए यह तो शिक्षा है। इस शिक्षा को प्राप्त करने के लिए ये स्थान अनुकूल होते हैं। यह उस स्थान पर हो रहा है जहां पर बच्चों को शिक्षा मिलती है।

बच्चों का तथा आचार्यों का भी आभारी हूं

बच्चों का भी आभारी हूं। आप को उन्हों ने स्थूल बरसात में स्थान दे दिया। यह बात हमेशा किसी के एहसान को भूलना नहीं चाहिए। याद रखना चाहिए।

एहसान को नहीं भूलना चाहिये

पहले के लोग छोटे से एहसान को भी कभी

Scanned with CamScanner

नहीं भूलते थे। एक भी गिलास पानी पिला दिया, तड़पते हुये को वह कभी भूलते नहीं थे। भूखे को एक रोटी मिल गई। वह भूलते नहीं थे। रास्ता चला जा रहा हो मार्ग भूल गया तो वह किसी ने बता दिया इस बहसान को नहीं भूलता था।

भारत का बड़ा आदर्श था

कितना भारत का बड़ा आदर्श था। हम लोगों को भी उसी आदर्श का यदि पालन कर लिया जाय तो क्या चीज नहीं आ सकती। सब कुछ आ जाएगा। मेहनत तो आप हम सभी लोगों को करनी पड़ेगी।

थोड़ा साधन का रास्ता साफ बना लो

तो बहुत अच्छा है। यह दिन मालिक की भगवान की प्रभू की कृपा से बहुत अच्छा। आज का; कलका भी। वर्षा नहीं हुई। कोई आपको तकलीफ भी नहीं हुई और सत्संग भी आप को उचित अनुकूल मिल गया। यहां से जाने के बाद अपने घर में अपने साधन में लगेंगे। और साधन करते चलो। और साधन का मार्ग जरा साफ करते चलो। मार्ग साफ हो जाएगा। एक आता है रास्ता साफ कर देता है ऐसा रास्ता बना देता है। हजारों उस रास्ते पर चल करके लाभ उठाते हैं। यही महात्मा फकीर थे रास्ता बना दिया हम लोग उनके रास्ते पर चल करके आज तक थोड़ा बहुत आराम पाते। जब रास्ता हम उनका बिगाड़ देंगे, बनाया हुआ, तो हमको ये संकट उठाने पड़ेंगे।

रास्ते पर चलने से ही सुख मिलेगा

इसलिए हम आप से अनुरोध करते हैं कि महात्माओं के रास्ते को जो उन्होंने बनाया था उसको साफ कीजिए। और जब उस रास्तेपर चलेंगे तो भौतिक शारीरिक, हर प्रकार का आपको सुख का अनुभव, इन्द्रियों का और अध्यात्म का, आप की जीवात्मा को आनन्द मिलेगा। रास्ते को साफ कीजिए। यह आप लोगों से प्रार्थना है।

काशी के कार्यक्रम के प्रति ध्यान दें

और काशी के कार्यक्रम में किसी की कोई बात कभी भी अखबार में कागज पर कहीं भी कोई बात उस पर आप कुछ भी ध्यान मत दीजिए। अपना निशाना बिल्कुल पक्का। हमारा निशाना बिल्कुल पक्का रहेगा तो हमको कोई भी विचलित नहीं कर सकता। जिस निशाने में हम, और निशाना हमको अपने में बेध लेगा वह कोई भी इधर उधर नहीं हो सकता। आपको विचलित होने की कोई जरूरत नहीं। अपने निशाने के वहां पहुँचना है। वहां पहुंचना है। अपने निशाने पर बिल्कुल एक दम सीधे देखते रहिए।

हाथी से शिक्षा लीजिए

इधर से क्या आ रहा उधर से क्या? ये जानवरों की शिक्षा हम लोग लेते थे। हाथी चला जा रहा है रास्ते में कुत्ते बहुत आते हैं गांव गांव में। भूकते हैं आकर। लेकिन वह कुछ भी परवाह नहीं करता अपनी मस्ती में चला जाता है। और कुत्ते डरते भी रहते हैं कि यदि घूमता है मार दी सूंड तो हममें कितनी जान है। तो सीधे चले जाते हैं।

ताकत वाला उसका इस्तेमाल नहीं करता

इसलिए जिसके पास में ताकत है वह अपनी ताकत का उपयोग नहीं करता। वह तो समझता है। कि ताकत है। और उस ताकत से लोग डरते रहते हैं। अपने सीधे निशाने पर चलिए। विविध भांति की बातें आपके सामने आई थीं। आपने उन सब को कर दिया। अब जो थोड़ा बहुत कूड़ा कचड़ा रह गया होगा

Scanned with CamScanner

उसको साफ करने में कितनी देर। अरे बड़े-बड़े खन्दक, गढ्ढों को पार करके बिल्कुल आप आ गए। अब मैदान में जो कूड़ा कचड़ा वह तो दिखाई दे रहा। उसे साफ करने में क्या देर लगेगी। यह सोचना है आपको। अपने निशाने के पक्के रहो।

अपने निशाने पर काम करते रहो

हमने किसी की बात नहीं सुनी। हिन्दू मुसलमान, ईसाई किसी भी धर्म पुस्तक की किसी भी मस्जिद, मंदिर और गिरजा घर की हमने कोई बात नहीं की। अपने निशाने पर आपके सामने काम करता रहा। और यह यहाँ तक हिन्दुस्तान के लोगों को पहुँचा दिया।

समर्थन वाले नहीं ये फालोवर हैं

आज भारत वर्ष में कई करोड़ आदमियों की निगाहें इधर। समर्थन की बात छोड़ दीजिए। ये लोग हैं फालोवर। समर्थन वाली बात छोड़िए। समर्थन तो बहुत मिल जाएगा। समर्थन वाली बात पर हम ध्यान नहीं देते। हम उन पर देते हैं जो मुसलमानों ने कहा मुरीद। सच्चे आशिक।

समर्थन वाले तो रोज बदल रहे हैं

समर्थन तो आप देखते ही रहते हो उसकी तो कोई बात नहीं। वह कोई महत्व वाली वस्तु नहीं रखती है कि आज समर्थन दे दिया और कल गाली देने लगे। ऐसे समर्थन का कोई मूल्य नहीं होता।

जो अपना सुधार कर रहा उसे परमात्मा मदद दे रहा है

इसको तो पीछे कर दीजिए लेकिन उन शहीदों की बात को याद कीजिए जो मुहम्मद ने बतायी। राम और कृष्ण ने कबीर और रैदास बुद्ध ने उन बातों को याद कीजिए। ईसा मसीह। यदि वह सब बातें याद कर ली जांच तो सब कुछ आप को मालुम हो जाय। इसलिए कोई आप किसी तरफ देखिए नहीं। भगवान उसके साथ है जो अच्छे काम करता है अच्छे रास्ते पर चलता है। अपने आप को बदल रहा। कोशिश कर रहा। भूलों की माफी मांगता है। प्रार्थना करता है। रोता चिल्लाता है वह हमेशा चौबीसों घण्टे अपने आप को सम्भलने में, बदलने में लगा हुआ है भगवान उसके साथ है। उतनी ही उसको क्षमता और शक्ति और ज्ञान बर बर दे रहा उसकी कोई बात नहीं है।

मैं महात्मा नहीं एक आदमी तो हूं

भगवान का हमेशा विश्वास रखो। हम भी भगवान का विश्वास रखते हैं हम तो कोई महात्मा नहीं। आदमी जरूर हैं। हम तो कोई भगवान नहीं। लेकिन आदमी कहने से तो इन्कार नहीं किया जा सकता। भगवान का हम भी नाम लेते हैं और भगवान की आराधना हम भी करते हैं और आप से भी भगवान का नाम लेवाते हैं। उसकी आराधना आप से भी कराते हैं। इसलिए

ना घर तेरा ना घर मेरा,
और वह है चिड़िया रैन बसेरा।

न तुम्हारा घर न मेरा घर। हमको भी जाना तुमको भी जाना और जहां जाना है वही बात बतानी है। वहीं के लिए कहना है कि चलो अपने घर में। यहां घर तुम्हारा नहीं है तो इसलिए हम भी आदमी तुम भी आदमी हो। तुमको भी अधिकार मिला हमको भी अधिकार मिला।

महात्मा की बात का आदर करना चाहिये

तो महात्माओं ने जो बातें आप के सामने रखी थी वह अमोलक थीं। हम लोगों को

महात्माओं की बात का आदर करना चाहिए था। उनके एक एक बात पर आंसू गिराना चाहिए था। आने वालों का जीवन कितना उच्च कोटि का होता आज हम लोगों को उनके जीवन से जो आनन्द मिलता उसका तो अनुभव आप भी करते हो उस आनन्द का।

हम हर तरह से दुखी हैं

लेकिन आज इसलिए हम लोग महात्माओं के अमोलक बातों को ध्यान में नहीं रखा। आज हम अपने बच्चों से परिवार से, मित्रों से हर किसी से रोते और चिल्लाते हैं। और इस बिमारियों को खरीद कर आपने रख दिया। उसके शिकार हो गये हो। आप रो रहे हो चिल्ला रहे हो। अब वह बात समझ में आपके आई।

काशी में आने का सबको निमन्त्रण है

काशी के लिए सब लोग और हम प्रयाग राज वासियों से अनुरोध करेंगे कि माघ मेला होगा ही उसके बाद ही फागुन में यह कार्यक्रम १५ फरवरी से २५ फरवरी शिवरात्रि के दिन इसकी पूर्ण समाप्ति हो जाएगी। आप जरा चलकर अपनी आंखों से तो वह शोर गुल का तो रास्ता ही है। इधर से कितने निकल के जाएंगे उनसे पूछिएगा कहां जा रहे हो। खुद ही बताएंगे आपको ट्रेने भरी हुई जायेंगी। रास्ते भरे हुए जाएंगे। सड़कें और मोटरें जाएंगी। आप खुद ही उनसे पूछ लीजिएगा। इसमें भी लेकिन यह है कि और लोग बड़ी दूर से चल कर आयेंगे। लाभ उठायेंगे और वह हिस्सा बंटायेंगे। उसके भागीदार बनेंगे। मुक्ति और भक्ती को सुफ्त में लेगें। वह कोई राज पाट त्याग करने पर नहीं मिलती है। सोना चांदी या खाना छोड़ने पर नहीं। वह तो एक अवसर होता है।

नाम लेते गुरु का रहो

नाम लेते गुरु का रहो, रटन लगाते गुरु की रहो।
ध्यान करते गुरु का रहो, दर्शन देते गुरु को रहो।
सेवा गुरु की हमेशा करो, वचन गुरु का हमेशा सुनो।
बुरे कामों से बचते रहो, संगत अच्छी में जाते रहो।
विश्वास गुरु का हमेशा करो, प्रेम गुरु में हमेशा धरो।
तन मन की सेवा करो, धन खर्च गुरु पे करते रहो।
पाप कर्मों की माफी मांगते रहो, फरियाद गुरु के आगे करते रहो।
दया मेहर लेते गुरु की रहो, गुरु के सन्मुख होते रहो।
भीख मांगते गुरु से रहो, दया दृष्टि गुरु की लेते रहो।
भाग्य बिगड़ा बनाते रहो, भूल अपनी सदा मिटाते रहो।
नामों का सुमिरन करते रहो, मन को जगत से मोड़ते रहो।
ध्यान में दृष्टि लगाते रहो, रूपों का चिन्तन करते रहो।
भजन में नाम सुनते रहो, सुरत को नामों से जोड़ते रहो।
दुनियां से ख्याल हटाते रहो, रूपों में ध्यान जमाते रहो।
अन्तःकरण पर औषधि लगाते रहो, हृदय को साफ करते रहो।
पकड़ कर नाम डोरी चढ़ते रहो, वह शब्द अमर रस पीते रहो।

Scanned with CamScanner

बचन बाबू जी महाराज—

परमार्थी कार्रवाई में टालमटोल करना ठीक नहीं

● जो निपट संसारी हैं और जिनको परमार्थ से कोई मतलब नहीं, उनका तो जिक्र ही नहीं है। जो परमार्थ में शामिल हुए हैं और जिनके अंदर इस बात की चाह पैदा हुई है कि हम मालिक की दया हासिल करें और हमारी परमार्थी चाल कुछ दुरुस्ती से बने, उन लोगों को अक्सर यह ख्याल पैदा होता है कि हम फलाँ २ काम से निबट लें तो फिर एक बारगी परमार्थ में लगें। रिटायर हो कर पेन्शन मिल जाय, लड़के या लड़की की शादी कर लें या जिस बीमारी में मुब्तला हैं, उस से सेहत हो जाय या फलाँ झगड़े बखेड़ों से निबट जावें या धन का जो नुकसान हो गया है, फिर पैदा करके उतना जमा कर लें या संसार में फलाँ बिगाड़ हो गया है, उसको सुधार लें, तब परमार्थ में शामिल होंगे। यह बात ठीक है कि किसी २ वक्त कोई ऐसी बीमारी या झगड़ा बखेड़ा या चिन्ता पैदा हो जाती है कि जब तक वह मौजूद है, मन और सुरत को अंतर में लगाने की कार्रवाई नहीं हो सकती। कोई बीमारी ऐसी लग जाती है कि जिससे तन में बड़ी बेकली और घबराहट रहती है। कोई झगड़ा बखेड़ा ऐसा पैदा हो जाता है कि जिससे मन में बड़ी चंचलता और फिक्र रहती है। इन गैर-मामूली लाचारी की हालतों में अलबत्ता परमार्थ की किसी कार्रवाई का होना मुश्किल हो जाता है। जब तक वह बिल्कुल दूर न हों या उनमें कमी न हो, तब तक अपने को किसी कदर संसार से न्यारे करके परमार्थ में नहीं लगा सकते हैं। ऐसी लाचारी की हालतों में मालिक मुआफी दे सकता है। वरना इस तरह की बातें बहाने में दाखिल हैं और गलत ख्याल हैं। अगर हर एक बात को इस तरह पकड़ कर बैठ जायगा तो कभी परमार्थ कमा ही नहीं सकता ना-मुमकिन है। यह तो दुनिया का खवास है। इस दुनियां में रोग सोग दुख तकलीफ झगड़े बखेड़े वगैरा हमेशा लगे ही रहेंगे।

● जो सतसंगी हैं और जिनमें परमार्थी चाह बहुत गहरी बस गई है, वह ऐसी हालतों में भी परमार्थी कार्रवाई यानी सुमरन ध्यान भजन के लिये वक्त निकाल कर थोड़ा बहुत अपने चित्त को उसमें लगा सकते हैं। बहुत ज्यादा विक्षेप और विघ्न की हालत कि जिसका बिना जतन किये हुए किसी तरह परमार्थी कार्रवाई में लग ही नहीं सकते, बहुत कम देर ठहरती है। वह जल्द अपने को उससे न्यारा कर लेते हैं।

● इस दुनियां बुराई और बिगाड़ जड़ से नहीं हटाए जा सकते। कोई चाहे कि हम यहां सुधार करके दुनिया को बहुत आराम की जगह बना लें, किसी तरह का कील कांटा न रहे, ना-मुमकिन है। इनमें कमी बेशी होती

रही है और हो सकी है, मगर इनको दुनिया से बिल्कुल निकाल दें, ना मुमकिन है। इस दुनिया से और इसके झंझटों से सच्ची नजात हासिल करने की विधि और रीति ही न्यारी है। इस दुनिया में रह कर इन झंझटों से कोई नहीं बच सका। कोई नादान कहते हैं कि ऐसा कर लें, वैसा कर लें या हम मर जायें। मर जाने से क्या होगा? जन्म लेकर फिर यहीं आना है और यही पापड़ बेलने हैं इस तरह की बातें करना फिजूल है।

● सतजुग में ज्यादा सुख व आराम था और किसी कदर सतोगुनी और शुद्ध बर्ताव था। अब कलियुग में उसी कदर ज्यादा दुख तकलीफ और मलीनता है। समय नुसार और कर्मानुसार सब चीजें बदलती रहती हैं। कभी किसी में कमी और कभी किसी में ज्यादती रहती है। सतजुग में लोगों में सतोगुनी अंग और शुद्ध आचरण विशेष था। इसका यह मतलब नहीं है कि वह लोग शुद्ध घाट पर थे। सतोगुण भी तो माया से उत्पन्न हुए तीन गुणों में से ही है। सतोगुण की विशेषता से प्रकृतियां उस समय सतोगुणी थी। मगर इसका कोई एतबार और भरोसा नहीं है। इसकी कोई महिमा नहीं है। कभी सतोगुण प्रधान रहता है, कभी रजोगुण और कभी तमोगुण और उन्हीं के अनुसार प्रकृतियां भी रहती हैं, तीन गुण और पच्चीस प्रकृतियों का चक्र चलता रहता है। शुरू का वक्त था। उस वक्त मन और सुरत का बहुत नीचे उतार नहीं हुआ था, इसलिये किसी कदर आचार विचार व्यवहार में शुद्धता थी मगर जीव नीचे उतार की सीढ़ी पर थे। हर हालत में कर्म और जन्म मरन के चक्कर के बाद दूसरी हालत में पड़ने से ज्यादा नीचे उतार हुआ। इस तरह से बराबर नीचे उतार होते होते कलियुग में मन और सुरत बहुत उतर गये हैं और अब कलियुग का जहूर बड़े जोर शोर से हुआ है। ज्यों २ समय बढ़ता जायगा और भी जोर शोर से कलियुग का जहूर होगा। कलियुग महा विकराल समय है। इस समय में जो हालत गुजर रही है, उससे और भी ज्यादा दुख तकलीफ संताप आवेंगे और बड़ी भयंकर हालत होगी। अगर इस वक्त परमार्थ नहीं कर सकता तो इस हिसाब से उस वक्त तो बिल्कुल ही नहीं कर सकेगा और इस तरह से कभी परमार्थ बनना मुमकिन ही नहीं मालूम होता है। इसलिये यह ख्याल बिल्कुल पोच है कि हम फलां फलां काम कर लें या यहां की हालत में फलां फलां सुधार हो जावे, तब परमार्थ में एक बारगी लग जायेंगे। यह काल का विघ्न है। कोई न कोई रीति से काल सच्चे परमार्थ से हटाए और रोके रहता है। इससे सबको होशियार रहना चाहिये।

● वैसे कलियुग का जोर शोर बढ़ते बढ़ते एक हद तक बढ़ कर फिर काल का जोर कम हो जायगा और बाहर में अच्छी हालत आ जायगी। इस वक्त कलियुग का जहूर हुआ है और जीवों की हालत भी बड़ी निकृष्ट है, मगर चूँकि संत बराबर आ रहे हैं, इसलिये चैतन्यता बढ़ रही है और उसी कदर काल भी अपने विघ्न भरपूर लगा रहा है और लगाये गा, मगर एक वक्त और हद के बाद उसकी ताकत क्षीण हो जायगी और संतों के प्रताप से सुख और आराम का वक्त फिर आयगा।

● बहुत लोग रिटायर होकर पेन्शन लेकर परमार्थ के नाम से ऐसे काम में लग जाते हैं जो कमोवेश वैसा ही काम है, जैसा कि दफ्तर में करते थे। कुछ तो अपने बाल बच्चों की फिक्र अपने ऊपर ज्यादा लगा लेते हैं और उसमें अपना बहुत सा वक्त सर्फ कर देते हैं। बाकी वक्त में किसी पण्डित को रख लिया और उससे

Scanned with CamScanner

गीता वगैरा का पाठ सुन लिया। इस तरह से अपना वक्त गुजार दिया और समझते हैं कि हम परमार्थ कमा रहे हैं। अंतःकरन के घाट पर मन बुद्धि द्वारा गीता भागवत वगैरा के अर्थ करते कराते हैं। और दो चार आदमी मल कर उन पर वाद विवाद और वार्तालाप किया करते है। अंतःकरन के घाट की मन बुद्धि की बातों का नाम परमार्थ नहीं है वाद विवाद और वार्तालाप का रस लेते हैं। यह भी काल का बड़ा धोखा है। इसी किस्म के कुछ लोग किसी लड़ाई झगड़े या दुख तकलीफ की वजह से घर छोड़ कर दरिया के किनारे जा बैठते हैं और मन बुद्धि से विचार किया करते हैं। यह भी अन्तःकरन के ही घाट का मनो-विचार है और इससे और असली परमार्थ से कुछ मतलब नहीं। वह लोग घर बार वगैरा सब जरूर छोड़ देते हैं और नदी के किनारे भी जा बैठते हैं, मगर अंतःकरन के घाट की विद्या बुद्धि में उनका इस कदर उतार हो जाता है कि इससे तो वह घर पर ही बैठे रहते और कुछ नहीं करते तो अच्छा था। सच्चे परमार्थ से ऐसे लोग कोसों दूर हो जाते हैं और किसी तरह से वह समझाये ही नहीं जा सकते। उन पर संसार की ढाल ऐसी लगी है कि उस पर कोई परमार्थ का तीर लग नहीं सक्ता।

● उन चिंताओं, ख्यालों और डरों में से जिनसे यह तहोबाला हो जाया करता है और जिनकी वजह से यह अपने चित्त को परमार्थ में नहीं लगा सक्ता है, निन्नानवे फीसदी तो महज वहम होते हैं। भ्रम में पड़ कर यह दिल में ख्याल किया करता है कि फलां ने मेरे लिये ऐसे कह दिया या कर दिया और वह मुझे नुकसान पहुँचाने की कोशिश में है। इस तरह के ख्यालों में रात दिन मशगूल रहता है और किसी काम में तबियत नहीं लगती, हालाँकि अक्सर ऐसा होता है कि उस शख्स को, जिसके बारे में यह ऐसा ख्याल किया करता है, इन बातों से कुछ मतलब भी नहीं और न वह ऐसा बुरा ही है। बाद में इसको मालूम भी हो जाता है कि उस शख्स ने कभी नुकसान पहुँचाने की कोशिश नहीं की। जब किसी की निस्बत कोई वहम पैदा हो गया तो बदला लेने की ठान लेता है और बड़ा क्रोध आता है। वैर विरोध ईर्षा से ही क्रोध से जला करता है। यह संसार तो अग्नि भंडार है। अपने अन्दर भी और संसार में भी आग लगी रहती है। काम से भी आग लगती है। काम में सब तरह की कामनाएँ आ गई। कोई कामना उठाई और वह पूरी नहीं हुई या कोई वहम पैदा हो गया कि फलाँ आदमी उसके पूरा होने में रुकावट डालता है, तो बड़ा क्रोध आता है। काम, क्रोध लोभ वगैरा काल के बड़े भारी विघ्न हैं। इनसे बहुत होशियार रहना चाहिये। यह चित्त में विक्षेप पैदा करके परमार्थ से हटा देते हैं। जैसे चोर चोरी करना अँधेरे ही में पसंद करता है, वैसे ही काम क्रोध वगैरा तम पैदा कर देते हैं और काल को गालिब होने का मौका दे देते हैं। लोभ और मोह बहुत मलीन हैं। सतसंग में रहने से, सतसंग के असर से, यह मलीनता कम होती रहेगी और ज्यादा नहीं बढ़ने पावेगी। काम अंग वाला भी प्रीति से रोका जा सक्ता है यानी प्रीति से वश में आ सक्ता है और मोड़ा जा सकता है। मगर क्रोध सूखा है। क्रोध का मामला बड़ा मुश्किल है। उसके लिये कोई उपाय नहीं है, सिवाय इसके कि कर्म फल भोगें। भोगते २ जब उस तरह के कर्म हलके हों और कटें, तब वह हट सकता है। क्रोध और क्रोधी से बहुत बचना चाहिए।

● काम और क्रोध की जड़ यानी उत्पत्ति बहुत ऊँचे से है। सत्तदेश के नीचे से जब काल

और माया निकाले गये, तब उनको कामना पैदा हुई कि रस लेने के लिये हम क्या करें। उस वक्त वहां से काम की उत्पत्ति हुई है। उसके पहले अहंकार पैदा हुआ। प्रथम अहं के साथ अहंकार पैदा हुआ है और उसी के साथ क्रोध की उत्पत्ति हुई है। सतसंगियों और अभ्यासियों को बराबर कोशिश करते रहना चाहिए कि ये अंग और खास कर क्रोध, न आने पावें।

● जैसा कि ऊपर बयान किया गया है हकीकत में ज्यादातर चिंताएँ महज वहम की वजह से होती हैं। एक सतसंगी थे उनको यह भ्रम पैदा हो गया कि सतसंग में मुझे फलां २ आदमी मारेंगे। हकीकत में कोई मारने वाला नहीं था, भ्रम में पड़कर वहम पैदा हो गया था। रोज डण्डा लेकर आते थे और सबसे कहते कि कहीं मुझको कोई मारे नहीं। वैसे यह सब भी यों ही नहीं होता है। अपने अगले पिछले कर्मानुसार होता है। जो सतसंगी हैं और जिनको परमार्थ की चाह पैदा हुई है और अन्तर में सुरत अंग जाग गया है, उनके कर्म तो कटते ही हैं। इसके अलावा हर तरह की हालतों में मौज और दया शामिल हाल रहती है। अन्तर में कोई अंग बहुत प्रबल होगा जो किसी तरह से नहीं निकल सकता होगा। उसको निकालने के लिये ऐसा वहम और भ्रम पैदा होना जरूरी होगा। वहां लाग से कार्रवाई होती है। बच्चे से कहते हैं कि देखो पतंग आई या देखो यह क्या हुआ। उसकी तवज्जह उधर गई कि झट से सहज में चाकू से फोड़ा चीर दिया। अगर वैसे फोड़ा चीरा जाता तो बहुत रोता चिल्लाता, आफत मचा देता और कभी फोड़ा नहीं चीरने देता। इसी तरह से किसी प्रबल अंग को जो अन्दर में छिपा हुआ रक्खा है और जिसको किसी तरह से नहीं निकाला जा सका, निकालने के लिये किसी तरह के डर या भ्रम के ओझले की जरूरत होती है। जिस शख्स को एक कौड़ी में इतना बन्धन हो जितना करोड़पति को करोड़ रुपयों में न हो, उसका बन्धन काटने के लिये अगर ऐसा भ्रम और डर न पैदा हो तो कैसे वह बन्धन काटा जा सकता है? धात कर्म, अंग और बन्धन ऐसे होते हैं, जिनके कटने में जन्म लग जाता है। कई कई बरस लग जाते हैं। कोई कोई करम तो ऐसा होता है कि वह सतसंग से अलग रह कर ही कट सका है। बरसों सतसंग से अलग और दूर हो जाते हैं और फिर भी ऐसा होता है कि एक परत निकल गई और कट गई और मालूम हुआ कि यह अंग जाता रहा, मगर कुछ अरसे बाद फिर वही अंग अपना इजहार करता है। इससे एक एक परत के निकलने और कटने में बरसों लग जाते हैं।

● असल में परमार्थ क्या है? मन को मर्दन करना और उसका चूरन करना। मन का मर्दन और चूरन जरूर करना पड़ेगा। बिना मन को चूर किये कभी सुरत नहीं निकल सकी। संतमत के परमार्थ की कार्रवाई सुरत से ही होती है। पुराने वक्तों के अभ्यास संतमत से इसीलिये खारिज हैं कि उन अभ्यासों से सुरत नहीं निकलती। नीचे के घाट के अशुद्ध मन की ऊपर के शुद्ध मन के घाट पर चढ़ाई होती थी। जिस कार्रवाई में सुरत शरीक नहीं है और सुरत अंग नहीं बरामद, होता वह कार्रवाई परमार्थ से खारिज है। उससे भक्ति फल नहीं मिलेगा।

● परमार्थी चाल चलने और सुरत के निकलने के दो ही तरीके हैं। एक तो यह कि मन का मर्दन और चूरन हो। जब मन का मर्दन होगा, तब अन्दर में जो छिपे हुए भिखारी अंग धरे हुए हैं, वह उभरेंगे और निकलेंगे। संसार के दुख तालीफ की अग्नि की गर्मी देने

की जरूरत होगी। बहुत गर्मी पड़ती है, जमीन खुश्क होकर सूख जाती है। फिर पानी छिड़कने से जमीन के अन्दर से जीव जन्तु निकलते हैं। वह उस गर्मी में जमीन के अन्दर नहीं रह सकते। इसी तरह से मन को तपा २ कर उसका मर्दन और चूरन किया जायगा, तब उसके विकारी अंग काम क्रोध लोभ मोह अहंकार बैर विरोध ईर्षा आदि जो अन्दर छिपे हुए हैं और कभी नहीं दिखाई देते हैं, निकलेंगे। जब वह निकलेंगे, तब एक एक को पकड़ २ कर मारा जायगा। इस विधि से मन का मर्दन होगा और सुरत निकलेगी।

● दूसरा उपाय यह है कि सरन लेना यह है कि मालिक दया ग्रहण करने के लिये मुंह खोले। अगर प्यास होगी तो मुंह खोलेगा। अभी तो इसकी प्यास संसारी पदार्थों से बुझ जाती है। वह पैदा करनी चाहिये जो सिवा मालिक की दया यानी अमृत के किसी और चीज से शांत न हो। अगर ऐसी प्यास हीन हो और मुंह ही न खोले, तो दया कहां से होगी? जब दया होगी, वह मेहर के लिये जगह और गुंजाइश बना लेगी। जब तक सच्ची प्यास नहीं पैदा होगी, अमृत नहीं मिलेगा उसके लिये बहुत इंतजार करना पड़ेगा। बीच २ में मालिक कुछ अमृत भी देता रहता है, ताकि वह प्यास ज्यादा से ज्यादा बढ़े और सफाई हो होकर वह हालत पैदा हो जावे, जब कि सिवा अमृत के किसी से प्यास शांत न हो। "अमृत पी भी मरे, जहर की गांठ खोली"। दया इससे मुनासिब कार्रवाई करा लेगी। सिर्फ बात इतनी है कि उसके लिये प्यास पैदा हो और मुंह खोले। जब करना पड़ेगा, यही करना पड़ेगा। जो राधास्वामी दयाल की सरन में आये हैं और जिनको उन्होंने पकड़ा है, उनसे जरूर यह करा लेंगे यानी वह प्यास पैदा कर देंगे। जिसको पकड़ा है, उसको राधास्वामी दयाल कभी नहीं छोड़ेंगे यह बाना है जो उन्होंने धारन किया है।

काशी का साकेत महायज्ञ

बाबा जयगुरुदेव जी को बम भोले बाबा काशी विश्वनाथ जी ने स्वप्न दिया। अतः काशी में दसाश्वमेध घाट के उस पार रेती पर यह यज्ञ दो करोड़ से भी अधिक जन समुदाय की उपस्थिति में १५ फरवरी से २५ फरवरी १९७९ तक होगा। इस यज्ञ की पूर्णाहुति पावन पर्व शिवरात्रि के दिन २५ फरवरी को होगी।

इस यज्ञ में पांच देवता पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश देवता प्रसन्न किये जायेंगे। तब देश में खुशहाली, सम्पन्नता और सुख शान्ति तथा प्रेम आयेगा। लोग एक दूसरे की सेवा करने लगेंगे।

यज्ञ की मुख्य तिथियां

(१) १५ जनवरी ७९ से १४ फरवरी ७९ तक १ मास का कल्पवास।

(२) १५ फरवरी ७९ से २५ फरवरी ७९ तक ११ दिन का साकेत महायज्ञ।

(३) २५ फरवरी ७९ को पावन पर्व शिवरात्रि के दिन यज्ञ की पूर्णाहुति।

Scanned with CamScanner

जयगुरुदेव (दैनन्दिनी) डायरी सन् १९७९

पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी सुन्दर प्लास्टिक कवर में जयगुरुदेव डायरी छप रही है। यह तीन आकारों में उपलब्ध होगी।

(१) एक तारीख प्रति पृष्ट वाली डायरी ४"×६" आकार में मूल्य ३)५० रु०
(२) दो तारीख प्रति पृष्ट वाली बड़ी डायरी ४"×६" आकार में मूल्य २)५० रु०
(३) दो तारीख प्रति पृष्ट वाली छोटी डायरी ३"×४" आकार में मूल्य १)२५ रु०

डायरी में प्रत्येक पृष्ठ पर परम पूज्य स्वामी जी महाराज के अमृत बचनों के वाक्यांश होते हैं। और प्रारम्भ में महत्वपूर्ण तिथियां, त्योहार, अन्य सूचनायें तथा प्रमुख प्रार्थनायें।

डायरी दिसम्बर में तैयार हो जायेगी। प्रेमी जन अपने आर्डर अग्रिम धन के साथ शीघ्र भेजें। १० डायरी से कम एक साथ डाक से मंगाने पर डाक खर्च अलग से देना होगा १० डायरी से अधिक मंगाने पर डाक खर्चा नहीं लगेगा।

—व्यवस्थापक (डायरी) अमर सन्देश २३, पाण्डेय बाजार, आजमगढ़ उ० प्र०

जन जन में होगी क्रान्ति

परम पूज्य स्वामी जी महराज के अत्यन्त क्रान्ति कारी बहुचर्चित पद्यों का संग्रह, जो सन ६९ में छपते ही हाथों हाथ बिक गया था, पुनः छपाया गया है। इस प्रार्थनाओं के संग्रह की पुस्तक का मूल्य १) मात्र डाक व्यय २)५० अलग से लगेगा। अतः एक एक पुस्तक न मंगाकर प्रेमी पाठक २०-२५ प्रतियां एक साथ मंगायें तब डाक खर्च माफ हो जायेगा।

रुपया भेजने तथा पुस्तक प्राप्त करने का पता—

व्यवस्थापक (जन जन में) अमर सन्देश
२३, पाण्डेय बाजार आजमगढ़

प्रेमी पाठकों को सूचना

हम अपने प्रेमी पाठकों को सूचित करना चाहते हैं कि यह अंक नवम्बर दिसम्बर ७८ का संयुक्त अंक है। अगला अंक जनवरी में निकलेगा।

जिन ग्राहकों ने अहमदाबाद में अपना वार्षिक चन्दा दिया था और ग्राहक बने थे उनका वार्षिक चन्दा इस अंक से समाप्त हो रहा है। अतः जनवरी अंक को प्राप्त करने के लिए उन्हें वार्षिक चन्दा मनी आर्डर से भेजना चाहिये। —व्यवस्थापक अमर सन्देश, २३ पाण्डेय बाजार, आजमगढ़

Scanned with CamScanner

बाबा जयगुरुदेव का पत्र

प्रत्येक सत्संगी तन, मन, बुद्धि, बचन व धन आदि की सेवा में तैयार रहे। अभूतपूर्व कार्य काशी का होने जा रहा है आत्म धर्म व मानव धर्म के लिए। लोग भारत में शहीद हो गये तब धर्म को लोगों ने बचाया। अब सब प्रेमी जुट कर व तन्मय होकर पूर्ण विश्वास के साथ काम करें। आप किसी बात पीछे न रहें। नये लोग भी आगे आवें। मानव-मानव का परम धर्म व कर्तव्य है कि धर्म-सेवा में योगदान दें।

तुलसी दास
१६-९-७८

सतसंगी ब्रह्मचर्य का पालन करें

बाबा जयगुरुदेव की प्रेरणा प्रेमी जनों को अपने अपने मस्तिष्क को ठाक रखने के लिये व शरीर स्फूर्ति हेतु ताकि शरीर स्वस्थ रहे, एवं कल्पवास में भजन करने के लिये।

काशी में होने वाले 'सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ' में जो लोग बाम ध्वनि को पकड़ेंगे, उन प्रेमी साधकों को बाबा जी के कुछ स्वच्छ आदेश-

दो अक्टूबर से ब्रह्मचर्य का पालन पूर्ण रूप से करें। रोग, दोग, बीमारी कमजोरी आदि में तो काम देगा ही, मुख्य साधना में विशेष लाभ होगा। मन सुरत अच्छी तरह अन्दरूनी साधना में आनन्द ले सकेंगे।

ब्रह्मचर्य पालन से मन, बुद्धि व चित्त पर भारी स्फूर्ति रहती है। हर संयम का फल लोगों को काशी में १५-२-७९ से २५-२-७९ तक मिलेगा। कल्पवासियों पर विशेष दया रहेगी।

बम भोले की नगरी में होने जा रहा है
सतयुग आगवन साकेत महायज्ञ (तृतीय)
१५-२-७९ से २५-२-७९
२ करोड़ से ऊपर नर नारी काशी में होंगे।

काशी भारत का मुख्य तीर्थ स्थान है। यहां यज्ञों की रचना देखने से मालूम होगी। सत्संग वह सुनने को मिलेगा जो भारतवासियों ने अभी तक नहीं सुना। बम भोले भक्ती मुक्ती ११ दिन बांटो १५-२-७९ से २५-२-७९ तक। पूर्णाहुति शिवरात्रि के शुभ दिन होगी। मानव साधना का अनोखा अनुभव होगा।

देशवासियों को निमंत्रण देता हूँ। हिन्दू, मुसलमान, ईसाई पधारें।

---बाबा जयगुरुदेव

Scanned with CamScanner

अमर सन्देश

सतपुरुषों के बचन और वाणी ही संसारी जीवों के लिये सदा से प्रेरणा के स्रोत रहे हैं। इस लिये अपने जीवन में नया मोड़ दीजिये। अमर सन्देश के अनमोल बचनों को पढ़ कर प्रेरणा प्राप्त कीजिये और संतों का संग ढूंढ कर सतसंग कीजिये जीवन को सत्विक, प्रेमी और मानवी बनाइये। अमर सन्देश में छपे स्वामी जी महराज के अमर सन्देश व्यक्तिगत सामाजिक, मानसिक और आत्मिक क्रांति ला रहे हैं। आप भी इसे पढ़कर समय के संग आगे बढ़िये और इष्ट मित्रों को पढ़ाइये। यह समय की पुकार है।

—० सेवा भक्ति और साधन ०—

❀ गुरु आज्ञा, चाहे सैन में हो या बैन में, पालन ही उनकी सेवा है।

❀ गुरुदेव की नीति, रीति और प्रीति का निरन्तर ध्यान रखना कहीं भी विरोध न आने देना ही भक्ति है।

❀ परमानन्द की प्राप्ति के लिये दोषों का त्याग कर अन्तः करण को पवित्र बनाकर गुरू के एक एक शब्द पर कुर्बान होना ही साधन है।

मधु संचय

❀ शिवनेत्र आज भी मिलता है।

❀ शिवनेत्र प्राप्ति का गुरू मिलना चाहिये।

❀ सच्चा गुरु मिलने पर ईश्वर प्राप्ति सरल है।

❀ ईश्वर जीते जी मिलता है इसी मनुष्य शरीर से।

❀ गुरु आज्ञा को पूरा करना ही गुरु पूजा है। अपनी शक्ति लगा देने के बाद शक्तिमान प्रभु की ओर देखना ही प्रार्थना है।

Scanned with CamScanner

जयगुरुदेव अमर सन्देश
वर्ष ११, अंक ७-८ नवम्बर-दिसम्बर १९७८

रजिस्टर्ड एल० ४
Licence No. 1 Licenced to
Post without Prepayment

क्रमांक पुस्तक का नाम	मूल्य
१-साधक चिन्तन निरूपण	६० पैसे
२-याद रक्खो गुरु के वचन	४० पैसे
३-[illegible] के विचार	६० पैसे
४-परमार्थी उपदेश	७५ पैसे
५-[illegible] में प्रथा निर्माण	६० पैसे
६-[illegible] वाणी	६० पैसे
७-[illegible] लोकवार्ता	५० पैसे
८-[illegible] एरिया	५० पैसे
९-हम गुरु को कितना मानते हैं	०५ पैसे
१०-उपरोक्त ९ पुस्तकों की गत्ते की जिल्द	५ रु०

—: [illegible] :—

११-प्रार्थना चेतावनी संग्रह पूरी सजिल्द ३) रु० डाक खर्च कम से कम २)। पुस्तकों का सेट तथा प्रार्थना की किताब मंगाने के लिए डाक खर्च सहित मूल्य पहले भेजें। वी० पी० भेजने का नियम नहीं है।

१२-स्वधर्म साप्ताहिक वार्षिक मूल्य १०) स्वामी जी की विचार धारा का साप्ताहिक समाचार पत्र स्वधर्म साप्ताहिक निकलता है जिसका वार्षिक मूल्य १०) तथा अर्द्ध वार्षिक मूल्य ५) इसका रुपया व्यवस्थापक स्वधर्म साप्ताहिक, २६, पाण्डेय बाजार आजमगढ़ के पते पर भेजें।

रुपया भेजने तथा पुस्तकें मंगाने का पता—
व्यवस्थापक 'अमर संदेश'
२६, पाण्डेय बाजार आजमगढ़

(नाम पता यहां है)

ग्राहक संख्या 9805

श्री रामनाथ सिंह

पता

स्वामी और प्रकाशक—संत तुलसी दास जी महाराज, चिरौली सन्त आश्रम, कृष्णा नगर मथुरा।
मुद्रक—विश्वनाथ प्रसाद अग्रवाल के निमित्त अमर ज्योति प्रेस, आजमगढ़ में मुद्रित

Scanned with CamScanner